AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER — AUGUST 2022

St. John Mary Vianney

रक्षाबन्धन की
हार्दिक शुभकामनाएँ!

Hearty Congratulations
Dear & Rev. Dn. Vincent Anthony
श्रद्धेय उपयाजक विंसेण्ट
को हार्दिक बधाई और
शुभकामनाएं!

Assumption of
Blessed Virgin Mary

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Archdiocese at a Glance

Many Many Happy Returns of the Day!

His Lordship Most Rev. Dr. Joseph Thykkattil of Gwalior Diocese in Agra 13-14 Aug

Blessing at Baad (Mathura)

St. Thomas' Feast, Shastripuram

Sadbhawana honours its members

Gladwin Britto (Firozabad) smiles after receiving Holy Com.

Jug-Jug... Jio... (First Birthday)
Stephen Peter

Eden Stevenson

Editorial

प्रिय मित्रों, अग्रेडियन्स का अगस्त 2022 का **अमृत महोत्सव विशेषांक** आपके हाथों में है, आशा है कि आप इसे सराहेंगे, आपको पसन्द आयेगा। वैसे हमारा भरपूर प्रयास रहता है कि **अग्रेडियन्स** को किस प्रकार और अधिक पठनीय, प्रशंसनीय और बेहतर बनाया जाये। इस सम्बन्ध में आपके विचार और सुझाव हमेशा अपेक्षित हैं।

अगस्त महीना दो बातों या घटनाओं के लिए काथलिक जगत में विशेष है, प्रथम हम धन्य कुँवारी मरियम का **स्वर्गोदग्रहण का महापर्व** (15 अगस्त) को मनाते हैं। साथ ही उसी दिन अपने राष्ट्र की स्वंतत्रता की वर्षगांठ भी मनाते हैं। इस वर्ष हम अपनी **आज़ादी का अमृत महोत्सव** अर्थात 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। हर घर, मकान और संस्था पर अपना प्यारा तिरंगा फहराकर गर्व महसूस करें और कहें हम भारतीय हैं- स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिक हैं। केवल भाषण देने या नारे लगाने तक ही हमारा जोश, हमारे समारोह सीमित न हों, बल्कि हमारे दैनिक आचरण और पारस्परिक व्यवहार में भी यह प्रकट होना चाहिए। याद रखें- स्वतंत्रता जिम्मेदारी लेकर आती है। यदि हम स्वतंत्र होना/रहना चाहते हैं तो जिम्मेदार बनें-विशेषकर आज के युग में धार्मिक संकीर्णता, अन्धभक्ति एवं नकारात्मकता से उबरने का सशक्त प्रयास करें। सच्चे अर्थों में हम तभी आजाद कहलायेंगे, जब दूसरों को भी इन्सान के रूप में स्वीकार करेंगे और उन्हें भी जीने योग्य वातावरण या सुविधाएं उपलब्ध करायेंगे।

गत माह श्रद्धेय फादर एम. ए. जॉनसन ने पुरोहितों की मासिक साधना के दौरान अपने प्रभावशाली प्रवचन में डिसरमेण्ट (पहचान) विषय पर अपने सशक्त विचार प्रस्तुत कर हमें सच्ची पहचान/विवेक की गम्भीरता के बारे में समझाया। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि हर एक व्यक्ति की पहचान उसके बाहरी आवरण से नहीं, किन्तु उसके व्यवहार, विश्वास और विवेक से होती है।

संत पिता फ्रांसिस ने अपने अपोस्तोलिक लैटर (प्रेरितिक पत्र) **देसीदेरिओ देसीदेरावी** में विश्वासियों को सम्बोधित करते हुए पास्का रहस्य पर गम्भीरता से मनन-चिन्तन करने और पूजन-पद्धति के दौरान योग्य रीति से मनाने पर बल दिया है। इसी आशय से महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने अपने सभी पुरोहितों को प्रपत्र की एक-एक प्रति उपलब्ध करायी है। आशा है कि हमारे जिम्मेदार लोग इसे पढ़ेंगे और इसका अक्षरश: पालन करेंगे।

महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी ने गत माह मासिक सभा के दौरान हमें सम्बोधित करते हुए कहा कि, हम अफवाहों पर ध्यान न दें। अफवाहें घर, समाज और पारिवारिक सम्बन्ध सब बर्बाद कर देती हैं। यदि हमें किसी से कोई मनमुटाव या शिकायत है तो उस व्यक्ति से आमने सामने जाकर बात करें... किसी कहने-सुनने पर ध्यान न दें। कितनी सटीक सलाह!

गत सप्ताह सेमेस्टर ब्रेक के दौरान श्रद्धेय फादर प्रेयस एन्थनी घर आये हुए थे। वे आजकल दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने के लिए तमिलनाडु में रामा कृष्णा मिशन कॉलेज में विशिष्ट बी.एड. कर रहे हैं। एक वार्तालाप के दौरान उन्होंने बताया कि उनके यहाँ आश्रम में महाराजा (स्वामी जी) प्राय: बहुत बड़े परिवारों और रईस खानदानों से हैं। वे अपना सब कुछ त्याग कर लोगों/ मानवता की सेवा करने आते हैं। यदि उनके घर में कोई मर भी जाता है तब भी वे अपने घर नहीं जाते हैं। कितना बड़ा त्याग... कितनी बड़ी सेवा...। हममें और उनमें कितना अन्तर है... व्रत तो हम भी लेते हैं सेवा करने का!!

हमारे अधिकांश अग्रेजी-हिन्दी स्कूलों में परिणाम आशानुकूल बहुत अच्छे रहे। हमारे सभी प्रधानाचार्यों, शिक्षकों, छात्रों और कोचिंग सेण्टर चलाने वालों को बहुत-बहुत बधाई। विशेष बधाई के पात्र हैं जैत और अनूपनगर के हिन्दी विद्यालय, जहाँ रिजल्ट 100% प्रतिशत रहा। शहरों की तुलना में ग्रामीण अंचलों में इतनी सुविधाएं नहीं होती हैं, फिर भी सीमित साधनों के साथ बच्चों ने कड़ी मेहनत की, इसीलिए हमारी बधाई और आशीर्वाद!

हमारी कई पल्लियों में इस वर्ष '**ग्राण्ड पेरेण्ट्स-डे**' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सभी सम्बन्धित पल्ली पुरोहितों को धन्यवाद। समारोह के समाचार और फोटो इस अंक में प्रकाशित किए जा रहे हैं।

आपके पत्रों और सुझावों का सदैव स्वागत है।

ख्रीस्त में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस

(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

Shepherd's Voice

August 15 is the Feast of Mother Mary's Assumption and our Independence Day. I believe this to be a providential coincidence. I am sure that you will celebrate both these feasts as authentic disciples of Christ and true patriotic citizens of our beloved India.

Regarding the Assumption of Mother Mary, it is said to be the first Feast instituted in honour of the Mother of Jesus. It was spoken of in 325 AD at the council of Nicea. The Feast was originally celebrated in the East as the Feast of the Dormition. So when Pope Pius XII on November 1, 1950 proclaimed the doctrine of the Assumption as an article of faith, he was simply giving the stamp to a teaching that had been taught, observed, and held sacred for at least Seventeen hundred years.

Mother Mary's Assumption is the type and pattern of our own total resurrection. The Assumption is a sign of hope to us. In the Bible the body stands for the whole person. It stands for our whole life and activities- our joys and sorrows, our struggles and achievements. This Feast assures us that all that is truly human is precious in God's sight and destined to share in his own divine life and glory.

Mother Mary's Assumption invites us to hope for a new world and challenges us to transform the world we live in.

This year we celebrate the 75th anniversary of India's Independence. On the occasion of the First Independence Day of India, Jawaharlal Nehru said: "It is fitting at this solemn moment that we take the pledge of dedication to serve India and her people and still larger cause of humanity." For him service of India was service of the millions who suffer. In other words, working to end poverty and ignorance, disease and inequality of opportunity is service of India.

As we celebrate Azadi Ka Amrit Mahotsava, we will do well to evaluate ourselves against the high standard set by the early Christians. Of them it was said: "They are God-fearing and law-abiding. They are the leaven of the society around them, and they spread peace, joy and love everywhere. They take care of the poor, the weak and the homeless. They do good to others, and yet they are persecuted. But the more they are hated, the more they love and do good to those who hate and persecute them."

I wish you the blessings of the Solemnity of the Assumption and a Happy Independence Day!

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (संक्षिप्त रूप)

15 अगस्त धन्य कुँवारी मरियम का स्वर्गोदग्रहण और हमारा स्वतंत्रता दिवस है। मैं विश्वास करता हूँ, कि ऐसा होना एक दैवीय संयोग है। मुझे पूरा यकीन है कि ख्रीस्त के मौलिक शिष्य और हमारे प्यारे भारतवर्ष के सच्चे देशभक्त नागरिक के रूप में इन दोनों पर्वों को मनाएंगे।

माता मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण के बारे में कहा जाए तो यह पहला पर्व है, जो येसु की माता के सम्मान में स्थापित या घोषित किया गया। इसकी स्थापना 325 ई. में नीसा की महाधर्मसभा में हुई थी। प्रारम्भ में यह त्योहार पूर्व में डार्मिशियन के पर्व के रूप में मनाया जाता था। बाद में 1 नवम्बर 1950 को जब तत्कालीन संत पिता पियुस बारहवें ने स्वर्गोद्ग्रहण की धर्मशिक्षा घोषित की जब उन्होंने मात्र एक ऐसी शिक्षा पर अपनी अधिकाधिक मोहर लगाई, जो विगत सत्रह सौ वर्षों से पढ़ाई, मानी और सिखाई जा रही थी।

माता मरियम का स्वर्गोद्ग्रहण हमारे अपने पुनरुत्थान का कुल आधार और रूप है। स्वर्गोद्ग्रहण हमारे लिए आशा की चिन्ह है। पवित्र धर्मशास्त्र (बाइबिल) में शरीर से अभिप्राय है, एक पूर्ण व्यक्ति। यह हमारे समस्त जीवन और सभी गतिविधियों; हमारी खुशियों और दु:खों, हमारे संघर्षों और हमारी कामयाबी का मिला जुला स्वरूप है। यह त्योहार हमें इस बात का आश्वासन देता है, कि जो कुछ भी मानवीय है, वह ईश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य है और उसका दैवीय जीवन और महिमा सुनिश्चित है।

माता मरियम का स्वर्गोद्ग्रहण हमें एक नए जीवन के लिए आमंत्रित करता है और साथ ही इस दुनिया को बदलने की चुनौती भी देता है।

इस वर्ष हम अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। भारत की स्वतत्रंता के अवसर पर पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, ''यह उचित ही है कि आज हम इस भव्य अवसर पर भारत और इसके सभी नागरिकों की और इससे भी बढ़कर समस्त मानवता की सेवा का व्रत लें।'' उनके लिए भारत वर्ष की सेवा करने का मतलब था, करोड़ों दीन-दु:खियों की सेवा करना। अन्य शब्दों में, भारत की सेवा करने का अर्थ है- निर्धनता, अज्ञानता, बीमारी और अवसरों की असमानता दूर करने के लिए कार्य करना।

जब हम इस वर्ष आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो हम प्रारम्भिक ख्रीस्तीयों द्वारा स्थापित मापदण्डों (मानकों) पर अपना मूल्यांकन करेंगे। उनके बारे में कहा जाता है, वे ''ईश्वर से भय मानने वाले और नियम (कानून-कायदों) का पालन करने वाले हैं। वे अपने चारों ओर विद्यमान समाज के लिए खमीर (समान) हैं। वे सर्वत्र शांति, आनन्द और प्रेम फैलाते हैं। वे निर्धनों, कमज़ोरों और बेघर लोगों की सेवा करते और उनका ध्यान करते हैं। वे दूसरों के साथ भलाई करते हैं, फिर भी उन्हें सताया जाता है। किन्तु जितना अधिक उनसे नफरत की जाती है, उतना ही अधिक वे उनसे, जो उनसे नफरत करते और सताते हैं, प्रेम करते हैं।''

मैं स्वर्गोद्ग्रहण के महापर्व की आशीष और स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**

(महाधर्माध्यक्ष, आगरा महाधर्मप्रांत)

Know the TRUTH! Be FREE!

Practices were going on in the auditorium for the Investiture Ceremony and during one of these rehearsals, I lost my cell phone. I began to get agitated, thinking, "How can today's kids play such pranks?"After much searching, when I got back to my office, I found my mobile on the table. Some students had found it lying in one of the corridoors and had diligently brought it back to the office. I exclaimed, "Praise God! We got wonderful kids!" Time and again, experience has taught me that when something unusual or seemingly bad happens, don't immediately jump to conclusions. Put things in 'Suspense File'. Even when people come accusing anyone or anything, don't immediately jump to conclusion. LISTEN…listen to both sides…find out the TRUTH…'and the truth will set you free'!

I have a cousin who was unwell. He went for a medical examination. They tested everything except two more markers, to see if he had cancer or not. Now the report was all negative and he thought he was okay. But he had cancer and by the time, they discovered it, it was too late. Because he did not know the truth. He was given false information that he was absolutely fine, even though he had the symptoms! Truth matters!

Truth is factual. Truth is not invented. Truth is not by majority decision. Truth is timeless and universal. Truth can be painful. Truth is narrow and exclusive. Contemporary philosophy preaches, "There is no such thing as 'absolute truth'.Whatever you believe in, is true for you."Sorry, Truth is either YES or NO.

Soren Kierkegaard, a Danish philosopher, popularly known as 'the Father of Existentialism', says, "There are two ways to be fooled. One is to believe what isn't true; the other is to refuse to believe what is true."

The Holy Bible tells us that Satan is a liar and the only way he can control us, is, by making us believe his lies. He would say, "Everyone is doing it! Do whatever makes you happy (you only live once)! More money, more happiness! Follow your 'heart' (Brad Pitt and Angelina Jolie who had a 'Live in' for 10 years to see if they were compatible and after such long testing, when they finally married, they divorced within 2 years, because the 'chemistry of hearts' changed)!"

Satan would tell you, "God doesn't love you! If God really loved you, how could you have all these financial or family problems? If God really loved you, why He would let you suffer?"Friends, do not be disheartened! Know the Truth! Gold is always tested in fire…Diamonds are always formed under pressure. What greater proof of God's love do we need than 'For God so loved the world that He gave His one and the only Son'(John 3:16).

Psalm 119 says, "Great peace have those who love your law, and nothing can make them stumble". Satan would tell you, "Sin is an old fashioned concept. Forget about feeling guilty." But the truth is, no matter what he tells you; since you are created by God and for God, when you sin, you do not have peace. You can pretend to have peace, you can numb yourself through activity or drugs; but at the end of the day, if you don't have peace, you don't!

Quite often we are in denial mode and we assume that we are already free, but, in John

8:34, Jesus says, "Very truly I tell you, everyone who sins is a slave to sin". True freedom is the desire and the ability to do God's will and to be all that God has designed you to be. It is the desire and ability to do good and to say 'No' to sin. John 8: 31 says, "If you ABIDE in My word, you are My disciples indeed. And you shall know the truth, and the truth will set you free." Truth and freedom go together and for that, it is important to ABIDE in His Word and obey it!

Most of us are not really free. We have counterfeit freedom and we fail to understand the subtle bondages that hold us captive; that may be any addiction, or more subtle forms of slavery like materialism, bitterness, anger, pride, worry etc. These are sophisticated forms of disobedience to the Word of God and thus, these enslave us. But we have the Good News in John 8: 36, "So if the Son sets you free, you will be free indeed". Its JESUS who is the Truth and leads us to true FREEDOM.Do we know Him?Most of us like to be in control of our lives. But, its only when we have learnt to give up our full control and hand it over to Jesus, that we are truly set free.

On our way to Bhowali hills, as we stopped for a tea break, I got a chance to watch skydiving. The instructor holding on tightly to the diver, had a freefall off the cliff. I breathlessly wondered what if the parachute didn't open up? What if something went wrong technically? But, I saw the divers had absolute faith in the instructor as well as the parachute; so they could simply enjoy the experience.

Some of us are going through this freefall in our life right now…completely uncertain what the future holds…nothing seems to be going well…no securities around…we are nervous and anxious. My friend, as you are having the freefall, let-go of the 'need to be in control'…Allow the Master Instructor to hold you tight and take absolute control. Just say, "Lord I am going to trust you, whatever". Relax and enjoy the view of the vast expanse…trusting that at the end of the day, He will make you land safely! And that indeed, would be an amazing journey…and you will know the TRUTH and the TRUTH will set you FREE! Wish you a Blessed Feast of the Assumption of our Heavenly Mother and a Happy Independence Day!

Sr. Rekha Punia, UMI

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (AUGUST, 2022)

2	Visitation: St. Fidelis Sr. Sec School, Aligarh
2	Holy Mass: St. Mary's of the Angels (FSMA), Aligarh
3	Visitation: St. Peter's Inter College, Rhota
4	**Birthday of Abp. Albert D'Souza**
4	Visitation: St. Dominic's Sr. Sec School, Mathura
6	Journey to Allahabad
7	Diaconate Ordination: St. Joseph's Cathedral, Prayagraj
9	Return to Agra
12	Meeting: ARBC& ARPC, Lucknow
13	Meeting: ARBC& ARPC, Lucknow
13	Blessing: St. John's Sr. Sec School, Firozabad
14	Holy Mass: St. Mary's Church, Noida
15	Blessing: St. Francis Xavier's Regional Seminary, Etmadpur
16	Visitation: St. Clare's Senior Sec. School, Agra
17	Visitation: St. Paul's Inter College, Agra
18	**Clergy Recollection**
21	Holy Mass: St. Xavier's School, New Delhi
22	Holy Mass: Missionary of Charity, Agra
25	Journey to Bengaluru
27	Return to Agra

परमेश्वर की आशीषों का प्रकाश

मैने तेरे अपराधों को काली घटा के समान, और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है। (यशायाह 44:22) मैं तेरे संग तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उड़ेलूँगा। (यशायाह 44:3)

और वही उनकी आंखों से सब आंसू पौंछ डालेगा इसके बाद न मृत्यु रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी, पिछली बातें समाप्त हो गईं। (प्रकाशित वाक्य 21:4)

मैं सोचता हूँ कि पवित्र कलाम के द्वारा परमेश्वर ने अपनी आशीषों से मुझे मालामाल कर दिया। मेरे अपराधों को मेरे पापों को, मेरे वंश पर, मेरी सन्तान पर, यहां तक कि मुझे मुत्यु के शोक से भी बचा लिया, फिर मुझे क्या आवश्यकता है कि मैं उसकी इबादत करूँ, क्यों उस पर विश्वास करूँ और अपना समय बर्बाद करूँ, क्योंकि मुझे तो सब कुछ मिल चुका है। प्रिय अज़ीज़ो, जिन्दगी की इस अंधकारमयी दौड़ में मैं भी भागा जा रहा हूँ। कभी दीवाल पर टंगी उस घड़ी पर निगाह करता हूं तो वह हमेशा एक ही आवाज करती है, टिक-टिक-टिक, लेकिन मैं समझ ही नहीं पाता हूँ कि कहाँ टिकूँ कहाँ रुकूँ। बस भागता ही जा रहा हूँ। मैंने पवित्र कलाम पढ़ लिया और सोचा कि सब पूरा हो गया।

पवित्र कलाम में तो यह भी लिखा है- तब उसने मनुष्य से कहा, देख प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है और बुराई से दूर रहना यही समझ है। (अय्यूब 28:28) जैसे देह आत्मा के बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कार्य के बिना मरा हुआ है। (याकूब 2:26) तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। (मत्ती 5:16)

जब हम दूसरों की मदद करने के लिए कदम बढ़ाते हैं तब हमारी अधूरी चमक भी परमेश्वर के प्यार के प्रतीक के रूप में काम करती है। प्रभु यीशु ने हमें दुनिया के लिए अपना प्रकाश कहा है। मेरा मानना है कि जो लोग चमकते हैं वे अंधेरे से स्वयं और दूसरों को भी बाहर जाने के लिए होते हैं। जिस तरह चमकने वाली वस्तुएं अंधेरे में सबसे अधिक उपयोगी होती हैं। जो लोग पांव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आते हैं।

चांदनी की ताजगी और शीतलता का आनन्द वह मनुष्य लेता है जो दिन भर धूप में थककर लौटा है और उसका मन यह जानकर सन्तुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है। जो दिन भर खिड़कियां बन्द करके पंखे के नीचे छिपा है भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चांदनी का आनन्द ले रहा है लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन रात सड़ रहा होता है। परमेश्वर पर यकीन करने वाला मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपने जीवन की किताब पढ़ता है जैसे सिंह अकेला होने पर भी अपने आप में मगन रहता है। जिसके मस्तिष्क में परमेश्वर का प्यार और डर होता है वह अन्तिम पड़ाव तक अपनी जीत हासिल करता है परमेश्वर पर विश्वास वह आधार है कि आपकी ऊर्जा से आपको पृथ्वी से आसमान की उड़ान भरवाने में सक्षम होती है प्रयास करके देखें। जैसे दरख्त तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा रहता है उसे यह ख्याल ही नहीं होता कि मुझमें कितने फल या फूल लगेंगे और कब लगेंगे। उसका काम तो अपने आपको सत्य में रखना है सत्य को अपने अन्दर कूट-कूटकर भरना है और अन्दर ही अन्दर बढ़ना है। उसे इस चिन्ता से क्या मतलब कि कौन मेरे फल खाएगा या मैंने कितने फल लोगों को दिए? उसका सारा जीवन भीतर ही भीतर होता है। मनुष्य जीवन भी ऐसा ही होना चाहिए। ***शेष पृष्ठ ... 8 पर***

The Identity of a Catholic Priest as 'Father'

Some days ago, one of my companions told me, "My dear Father, I would like to do a study on the following theme: 'WHY DO WE ADDRESS A CATHOLIC PRIEST as 'FATHER'?" He wanted to understand deeply the logic behind the whole question, especially people's expectations when they address a priest as 'father'?

The Root meaning & its terminology:

The term 'father' for a priest has its origins in the monastic world of the medieval period. The head of a monastery was an 'abbot', meaning the father of the community. Over the centuries, the abbots were almost always priests, and ordinary people referred to the monastic clergy in general as "the fathers." The use of monastic priests as spiritual advisers and confessors probably made the title more common, as in the traditional opening line of a confession, "Bless me, father". But even inside the monastery, the higher clergy were called 'dom' for the Latin "dominus," or "lord." They would have used the term 'lord' not in a divine sense, but in one who has dominion, like a feudal lord. As the Middle Ages declined and newer monastic orders were founded, their leaders or superiors were sometimes called "father superior" as a measure of respect. In Spain, the clergy were called "padre," which means 'father' in the sense of 'daddy', thus this title came to the Spanish new world.

Biblical Notions of the word 'Father':

In the Gospel of St. Matthew, Jesus said, "And call no one your father on earth, for you have one Father - the one in heaven" (23:9). Literally speaking we would have to marvel why we do use the title 'Father' when Jesus seems to forbid it. First, we must remember the context of the passage. Jesus is addressing the hypocrisy of the scribes and the Pharisees - the learned religious leaders of Judaism. Our Lord criticizes them for not being a good example, for creating onerous spiritual burdens for others with their various rules and regulations, for being haughty in exercising their office and for promoting themselves by looking for places of honour, seeking marks of respect and wearing ostentatious symbols. Basically, the scribes and Pharisees had forgotten that they were called to serve the Lord and those entrusted to their care with humility and generous spirit.

Keeping these thoughts in mind, Jesus says not to call anyone on earth by the title, 'Rabbi', 'Father' or 'Teacher', in the sense of demanding to oneself an authority which rests with God and of forgetting the responsibility of the title. Yes, as Jesus said, only the heavenly Father is the true Father, and the Messiah, the true teacher and rabbi. We call those who instruct us and others as 'teacher'; our male parent 'father'; and Jewish religious leaders 'rabbi'. Especially in a spiritual sense, those who serve the Lord and represent His authority, as a teacher, parent and especially a priest, must be mindful of exercising it diligently, humbly and courageously. To use this authority for self-glorification is pure hypocrisy. Jesus said at the end of this paragraph (Mathew 23:12),"Whoever exalts himself shall be humbled, but whoever humbles himself shall be exalted".

The Historical Background of the word 'Father': Since the earliest times of our Church, we have used the title "Father" for religious leaders. Bishops, who are the shepherds of the

local Church community and the authentic teachers of the faith, were given the title 'Father'. Actually, until about the year 400, a bishop was called 'papa' for Father; this title was then restricted solely to addressing the Bishop of Rome, the successor of St. Peter. St. Benedict (547) designated the title to spiritual confessors, because they were the guardians of souls. Moreover, the word 'abbot', denoting the leader in faith of the monastic community, is derived from the word 'abba', the Aramaic Hebrew word for 'father', but in the very familiar sense of 'daddy'. Later, in the Middle Ages, the term 'father' was used to address the mendicant friars - like the Franciscans and Dominicans, because of their preaching, teaching and charitable works; they cared for the spiritual and physical needs of all of God's children. In more modern times, the heads of male religious communities, or even those who participate in ecumenical councils such as Vatican II, are given the title 'father'.

Personal Persuasion: The adage of Ordained Priest as 'Father' for centuries and decades has been an ancient practice. The ordained members of many of the religious orders and congregations are addressed as brothers, confreres, friars, so on and so forth. For various reasons or circumstances, many of us don't present ourselves as Father or priests. This situation is prevalent in the Northern part of India, where Christian/Catholic presence is very low. In other words, many of us don't want our priestly identity to be known to the public.

As for me, as I travel to new places or encounter unknown people, at once I feel agitated or have a certain sense of discomfort to introduce myself as a priest. I would usually introduce myself as a teacher/formator, since I am working in a school/seminary as one. The title 'Father' is humbling in nature. The term 'Father' has an immense meaning in a wider spectrum. As a priest, 'Father' reminds me that I am entrusted with a great responsibility by our Lord towards His faithful. Just as a father must nourish, instruct, challenge, correct, forgive, listen and sustain so also the 'Priest' must meet the spiritual needs of those entrusted to his care, providing them with the nourishment of our Lord through the sacraments. He must preach the Gospel with fervour and conviction in accord with the mind of the Church, challenging all to continue on that path of conversion which leads to holiness. He must correct those who have blundered, but with mercy and compassion. As the father treats his prodigal son, the priest must reconcile sinners who have gone astray. As a father listens to his child, so must a priest listen to his spiritual children, providing counsel and consolation. A priest must also be mindful of the 'physical' needs of his flock - food, housing, clothing and education. **- Fr. Mariyan Lobo, Bengaluru**

पृष्ठ... 6 का शेष

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में निवास करता है? (1 कुरिन्थियो 3:16) और परमेश्वर का मन्दिर हमेशा साफ सुन्दर और चमकता हुआ होता है जिसे देख लोग उसकी स्वच्छता की तारीफ करें लिखा है, कि उठ प्रकाशमान हो क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है। (यशायाह 60:1) जब तू उसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय यशायाह और आनन्द से भर जाएगा। (यशायाह 60:5) परम दयालु परमेश्वर हमारे दिल, दिमाग और मुंह खोले ताकि हम आपकी दयालुता को दुनिया को बता सकें जैसा कि प्रभु यीशु ने हमें सिखाया।

— एस.बी. सैमुअल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

Positive Mind...

What could be the cruelest punishment given to a prisoner? Yes, this could be the capital punishment of hanging till death.

A doctor enters the cell of that prisoner who was given a death sentence to be hanged till death. He says to the prisoner " Young man after two days you will be hanged to death.Hanging until death is very painful. You have to struggle to breath which is impossible. I will give you two option.. One is that you will be hanged till death and other one is you will be bitten by a poisonous snake. The prisoner asked what is the difference. Doctor replied "hanging on a rope may take 3 0r 2 minutes and you will struggle painfully to survive.Whereas cobra bite will bring you instant death". The prisoner opted for second option.

Accordingly on the day of execution doctor brought a very poisonous snake. Then the prisoner was asked whether he has any last wish and the prisoner nodded his head with negative remark. Then as the time arrived for execution prisoner's head was covered with a black cloth till his neck. Then the doctor instead of cobra bite took 3 pins and pinched the prisoner. The prisoner thought the snake had bitten him and he died instantly. His body was taken for post mortem and the investigating doctor found that there was poison in his body. Now the question is, where does this poison come from, because the snake had not bitten him. The moment doctor pinched him his mind released poison to his body.

Our mind is the factory of our thoughts. Our mind can produce medicine and also it can also produce poison. The prisoner's mind was filled with full of negative thoughts and so he thought the 3 pins which doctor pinched him is really a cobra bite. At that very moment his mind released poison in his body.

We give good food to our body. Similarly we have to give good food to our mind too. Good food to our mind is good thoughts. Avoiding the company of negative people. Therefore it is said "If you want to be a winner rub your shoulders with winners. " So when the negative thoughts come into your mind try to throw them away and fill your mind with positive thoughts. When your mind is empty first of all negative thoughts enter and it is the work of devil. Today maximum people live with negative thoughts. Outward appearance may look positive in a family after a quarrel over any issue members don't talk to each other for a long time and none of them wish to reconcile and their life becomes tug of war.

Our mind accepts what negative people say and in this process it produces negative hormones and negative chemicals in our body.

People with positive thoughts look young and happy. People with negative thoughts look sad. When you are alone mind wanders here and there. Read a novel or a good book of inspiration. Otherwise go out of your house or room for a ride or shopping. Doing some manual work in garden, cleaning the house and surroundings etc will keep the mind busy and negative thoughts will disappear. Always think well of a person even you dislike them. The reason is when you think evil of a person negative thoughts will produce negative chemical and the person will choose the path of destruction.

When you go for work in the morning you pray to God "Lord I am going to do your will. Help me to do my duty well "and when you pray the nature comes to your assistance because in your work you see that divinity of God. That's why it is said when you think positive the result of work will be positive.

- J.P. Quadras, Mathura

Thoughts on Christian Freedom

"I will walk in the freedom for I have devoted myself to your Commandments" (Ps 119:45). This Psalm talks about keeping the laws and yet being free. Contrary to what we often expect, obeying does not inhibit or restrain us,it frees us to be what God designed us to be. By seeking God's salvation and forgiveness, we have freedom from sin and resulting oppressing guilt. By living God's ways we have freedom to fulfill God's plan for lives. "For the Lord is the spirit and where ever the spirit of the Lord is, there is freedom" (2 Cor 3: 17). When anyone becomes a Christian, the veil (of the pride, hardness of the heart, refusal to repent) is taken away. The glory of God is reflected and transformed into his likeness-eternal life and freedom from bondage. "God sent Him to buy freedom for us, who were slaves to the law so that he could adopt us as his very children" (Gal 4: 5). "He purchased our freedom with the blood of his Son" (Eph 1: 17). "You are slaves of no one except God so behave like free people and never use your freedom as a cover for wickedness"(I Pet 2:16) Instead use your freedom to serve one another in the LOVE (Gal 5: 13).

It can therefore be seen that Christian freedom is to serve God or to do his will and to serve others in love. Social changes have being significant. Democracy and republicanism are the norms of our days. The principles based on which, we Christians can participate in such set-ups draw our attention. How do we participate in the family, community and the government?

Family: United to Christ, a family is a member of this mystical body and has been called domestic church. It has to manifest itself in all circumstances as community of faith and love and of all social virtues. It is the seed -bed of social life to practice obedience, a concern for others, responsibility, understanding, mutual help and a loving coordination of essentially different characters. Health of a society is measured by the health of its families.

What type of family structure do we accept to have? Father is the head of the family and nourishes every desire and aspiration of the members of family? Does every member of family have fixed (assumed) responsibility, authority and the means? What happens when a member has to be away on work for short or prolonged periods of time? Who fills the void and takes up additional responsibilities? These are questions of family sociology and each Christian family has to resort to democratic means to avoid disappointment and resentment. Intra spouse and family Communications will have to be established by transparent means.

Community: God has given us number of talents which should not be allowed to rust. Professional prestige, generosity and the joy of giving and sharing should take us to participate in the community activities and in its governance. The basis of community service could be "have respect for everyone and love your fellow believers, fear God and honour the emperor" (I Pet 2:13)."For the sake of the Lord accept the authority of every human institution" (I Pet 2:3) "Everyone must submit to governing authorities for all authority comes from God" (Rom13:1).

Over the centuries, Christians understand Romans 13 in different ways. All Christians agree that we are to live in peace with the state as long as allowed to live by our religious convictions.

There have been different interpretation as to how to do it?

Some states are so corrupt that Christian should have as little to do as possible-not working for the government, vote in the election or serve in the military. Some believe that state has certain areas of authority and the church certain other areas. Christian can be loyal to both and can work in either.Spiritual and physical should not be confused thus complement each other. Christians have responsibility to make the state better. This can be done by electing Christians or other high - principled leaders. If we participate politically, "It's God's will that by your good deeds you should silence the ignorant talk of the fools" (I Pet 2: 5). We should drown evil with the abundance of good.(Rom 12:21). Christian love which is the simplicity, truthfulness, faithfulness, meekness, solidarity, and joy should be our shield and means. Great among you must be your servant (Mt 20:26). As you did it to me to the least of my brethren (Mt25:40). May the Lord tell us at the end of it all, you gave temporal gifts and I respond with celestial gift. You gave me things that will perish. I give you what is eternal

Col. Dorairaj, St. Mary's Church, Noida

पवित्र त्योहार: रक्षाबन्धन

हिन्दुओं के व्रत, पर्व और त्यौहारों की श्रृंखला में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी रक्षाबन्धन है। रक्षाबंधन का त्यौहार सावन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रक्षाबन्धन को राखी का त्यौहार और 'सलोनो' भी कहा जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के दाहिने हाथ की कलाई में राखी बांधती हैं और उनसे उपहार पाती हैं। रक्षाबन्धन के दिन पुरोहित भी अपने यजमानों के हाथों की कलाइयों में राखी बांधते हैं।

महाभारत काल में पाञ्चाल देश की राजकुमारी द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण को राखी बांधी थी। कहते हैं कि एक बार श्री कृष्ण के हाथ में चोट लग जाने से खून रिसने लगा। भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में खून देखकर राजकुमारी द्रौपदी ने तत्काल अपनी ओढ़नी फाड़कर उस पर पट्टी बांध दी। इस पर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा बहिन, यह पट्टी मुझ पर तुम्हारे ऋण के समान रही। आज से तुम्हारी रक्षा का भार मेरे ऊपर रहेगा।

जब कौरवों की द्यूत सभा में महाबली दुशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण किया जा रहा था, तब द्रौपदी ने अपनी रक्षा के लिए भगवान श्रीकृष्ण को पुकारा। उस अवसर पर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज की रक्षा की और राखी का कर्ज चुकाया।

रक्षाबन्धन की महत्ता पर अनेक रोमांचकारी घटनाएं इतिहास के सुनहरे पृष्ठों पर अंकित हैं। अनेक वीर नारियों ने अन्या धर्मावलम्बियों के आक्रमण करने पर उन्हें अपना धर्मभाई बनाकर राखी बांधकर अपने सतीत्व की रक्षा की थी। सोफिया के राजा द्वारा पुरुष को अपना राखीबंध भाई बनाना और कर्मवती का मुगल बादशाह हुमायूँ को अपना राखी बंध भाई बनाना इतिहास की अविस्मरणीय घटनाएं हैं। रक्षाबन्धन का आदर्श महान है। रक्षाबन्धन भाई–बहन को रक्षा स्नेह के एक सूत्र में पिरोने वाला परम पवित्र त्यौहार है।

साभार: उमाशंकर तिवारी (दैनिक जागरण)

The Assumption of Our Blessed Mother

"As the mother knows the needs better than the babes, so also the Blessed Mother, Queen of Heaven and Earth understands our cries and worries and knows them better than we know ourselves."

This August, as in every year, we remember the Immaculate Heart of Mary, so we celebrate the ASSUMPTION of the Blessed Virgin Mary. It is the most important of all Marian feasts as it commemorates the death and the bodily assumption of Mother Mary into heaven and her translation into the Kingdom of her Son in which she receives from Him a Crown of Immortal Glory and a throne above all the other saints and heavenly beings. This completed God's work in her, since it was not fitting that the flesh that had given life to God [Jesus] Himself should even undergo decay.

The Catholic Church considers Mother Mary to be our Co-Redemptrix. She uniquely collaborated in the work of salvation, as in union with Christ and yielding to Him, she collaborated to obtain the grace of salvation for all humanity. Mary's role was not of the most powerful, feminine kind, but supportive. She was always by her Son's side. Mary became the reason for the first miracle performed by Jesus, at the Wedding at Cana.

We do not get any information from the Bible about the Assumption of Mother Mary. It was a doctrine [set of beliefs] defined by Pope Pius XII on November 1, 1950, in the apostolic constitution of the 'Munificentissimus Deus'.

Mother Mary was free of Original sin and its stain, yet she had to go through a lot of sorrow in her life, which she endured and never complained about.

To live and raise Jesus and know He would die a miserable death, probably killed her inside. She accepted the call because that is what God asked of her. She lived her Son's passion to the depths of her soul. She was fully united to Him in His death, so she was given the gift of assumption.

Mother Mary is our representative. She is the first of the redeemed, who entered heaven. Thus, when we pray the 'Hail Mary', we are praying to Mary, telling her to tell Jesus to help us and to pray for us. Mary helps us to get closer to Jesus. She wants us to follow the right path and she wants us to be with her and Jesus and the saints in Heaven.

'Rejoice, the Queen of Heaven, Alleluia'

Jibi Lukose, St. Mary's Church, Agra

Of Your Charity

Please pray for the respose of the soul of Sr. Margaret Quadras, DSH, sister of J.P. Quadras, Mathura on 08 Aug. 2013 (her 9th Death Anniversary)

Feast of Sts. Joachim and Anne (26th July)

Many people and images come to mind. When we think of Christmas: Joseph and Mary on the road to Bethlehem, the shepherds, magi, inn keeper etc. But there is another set of people who played a key role in Jesus' birth: his grandparents, Joachim and Anne.

The holy scripture tells us nothing about Mary's parents. Even there names come from a second-century document. Still, there is a long tradition that celebrates this holy couple. They were entrusted with the mission of creating a loving nurturing home environment for the girl who would become the virgin mother of God. The ancient traditions give the parents names, as Anna meaning 'grace' and Joachim, which means 'Yahweh prepares'. Virgin's parents were from Galilee and they came to Jerusalem and died there. Mary was born in answer to a prayer when they had long been childless.

Anne and Joachim are often invoked as partern of married couples who struggle with infertility. As a holy couple and not just individuals. Anne and Joachim are honoured with a joint feast day on July 26. Of course, Joachim and Anne did more than just receive the legacy of faith from their family and their people; they also nurtured it and passed it on.

Mother Mary pondered the events of Jesus' early life. Perhaps Anne and Joachim did too as they prayed about their daughter's future with Joseph and their new child.

May these holy grandparents of our Lord, whose story is treasured by generations of belivers. teach us how to be open to God's surprises. May they teach us the blessings of patience and faithfulness. And may they help us see the wonderful story of God's love for his people.

DATES TO REMEMBER (AUGUST)

01 B.D. Fr. Cyril Prakash Moras
04 B.D. Archbishop Albert D'Souza
04 O.D.Fr. John Roshan Pereira
05 B.D. Fr. Sunil Mathew
09 B.D. Fr. Raphy Vallachira
12 D.A. Fr. Joe Vadakkekara
15 B.D. Fr. Sebastian Kollithanam
15 B.D. Fr. Philip Correia
24 O.D. Fr. Peter Parkhe
26 B.D. Fr. Prakash Rodrigues

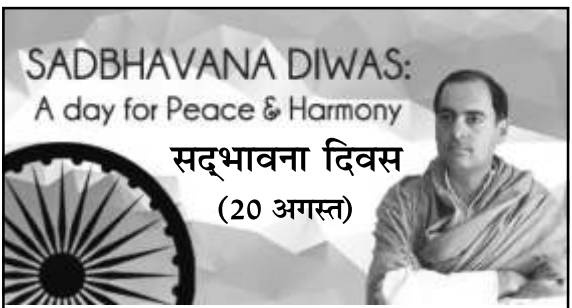

सद्भावना दिवस की प्रतिज्ञा

मैं, पूरी गंभीरतापूर्वक यह प्रतिज्ञा करता हूँ, कि मैं जाति, क्षेत्र, धर्म और भाषा के भेदभाव से ऊपर उठकर भारतवर्ष के सभी लोगों की भावनात्मक एकता और सद्भावना के लिए कार्य करूँगा।

मैं, यह भी प्रतिज्ञा करता हूँ, कि अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए, संवैधानिक साधनों और आपसी बातचीत द्वारा एक-दूसरे के बीच की दूरियों को समाप्त करने का सतत् प्रयास करूँगा।

Know your Deacon - Bro. Vincent A. Swamy

I am Vincent Anthony Swamy S, pursuing my theological studies in St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad. My soul is replete with joy as I relive the trodden path of my formation from the day I joined seminary.

I come from a small village named after Mary called Mariyamanglam (Praise to Mary), District of Chamarajnagara, Karnataka. My father late Mr. Selvam was an ardent devotee of Mary, St. Anthony of Padua and man of hard work. My mother Mrs. Sagayamary, a pious and poignant woman. They instilled in me to have a firm love towards Mary and Eucharist. Whenever I confronted with any difficulty in any field their only admonish was to 'surrender it to Mary and pray to her she will guide you'. In this way, they formed my faith, which yielded to heed the call to priesthood.

I am the last child to my parents born on Aug. 23, 1994, I have two sisters older to me. My parents grappled with vicissitudes but they did never lose faith in God. All these faith-reinstating incidents prompted and promoted me to fix my eyes on Christ incessantly.

In the year 2012, I joined St. Lawrence Minor Seminary, Agra. The onward formation commenced with careful guidance by priests and paternal blessings of Most. Rev. Dr. Albert D'Souza. After two years of minor seminary, I was promoted to Regional Seminary for one year of Spiritual Orientation and 3 years of philosophical studies at St. Francis Xavier Regional Seminary (MVP), Agra.

On successful completion of my Philosophical studies I was sent for Regency to Anupnagar, Mathura. Rev. Fr. Roshan D'Silva the Parish Priest and principal guided me circumspectly. He is a man of few words with sound judgement and wisdom. The timely meetings with Bishop, spiritual enrichment in the seminary saddled my desire towards the priesthood.

Then in the year 2019 I was promoted to the St. Joseph Regional Sseminary, Prayagraj to pursue my theological studies. With deep sentiments of gratitude, I acknowledge the contribution of the Diocese, Most. Rev. Albert D'Souza, the Archbishop Emeritus, and Most. Rev. Rahphy Manjly the Archbishop and Chairman of St. Joseph Regional Seminary. Their constant prayers, paternal blessings and fraternal care made me thank God for His Glory. Foreseeing your prayers and blessings.

- Vincent Anthony Swamy S.

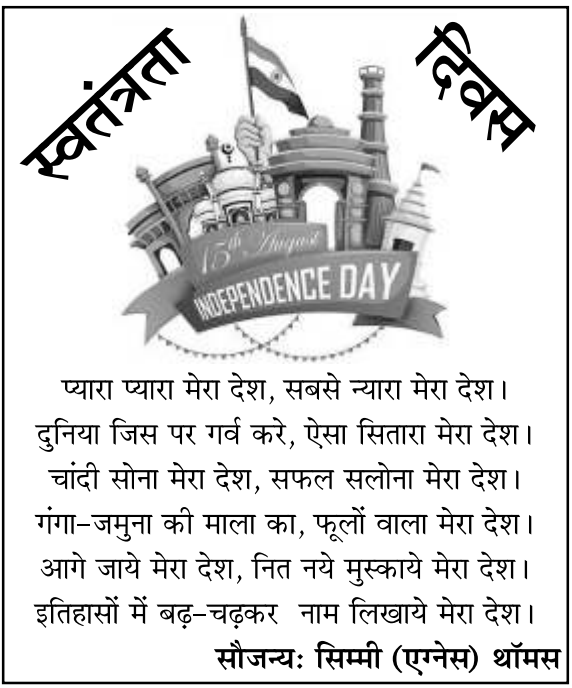

प्यारा प्यारा मेरा देश, सबसे न्यारा मेरा देश।
दुनिया जिस पर गर्व करे, ऐसा सितारा मेरा देश।
चांदी सोना मेरा देश, सफल सलोना मेरा देश।
गंगा–जमुना की माला का, फूलों वाला मेरा देश।
आगे जाये मेरा देश, नित नये मुस्काये मेरा देश।
इतिहासों में बढ़–चढ़कर नाम लिखाये मेरा देश।

सौजन्यः सिम्मी (एग्नेस) थॉमस

महीने के संत

जॉन मेरी वियान्नी

सभी पुरोहितों के संरक्षक संत (4 अगस्त)

मन से महान... तन से विद्वान... आत्मा से अथाह ज्ञान के स्वामी... मन, वचन, कर्म से सार्थक पुरोहित। सन्त जॉन मेरी वियान्नी का जन्म 8 मई 1786 को उस समय हुआ, जब फ्रांस क्रांति के दौर से गुजर रहा था। चारों ओर सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक बातों में गिरावट ही गिरावट आ गयी थी। एक ओर अमीर वर्ग सुखी व विलासिता का जीवन जी रहा था तो दूसरी ओर निर्धन वर्ग कठिनाइयों से त्रस्त था। सामन्ती शासन के रौब के आगे निर्धनों की शिक्षा, दीक्षा और स्वेच्छा से अपने धर्म को मानने पर भी सख्त पाबन्दी थी। ऐसे में जॉन मेरी वियान्नी को अपनी स्कूली शिक्षा व धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने में बहुत ही कठिनाई का सामना करना पड़ा, यहाँ तक कि उन्हें प्रथम परम संस्कार भी गुप्त रूप से लेना पड़ा, लेकिन प्रभु येसु में दृढ़ विश्वास उन्हें किसी भी तरह डिगा नहीं पाया। मात्र तेरह वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने आध्यात्मिक बातों पर गहन खोज कर कर ली थी और उनके आध्यात्मिक गुरु की सहायता से सन 1815 में उनका पुरोहिताभिषेक हुआ। तत्पश्चात वे उस स्थान पर भेजे गये जहाँ मानव संस्कृति बहुत पिछड़ी हुई थी। उन दिनों लियोन्स नगर का आन्स गाँव सामाजिक, नैतिक पतन में डूबा हुआ था, लोग शराब तथा अन्य व्यसनों में डूबे हुए ईश्वर से दूर थे। उनमें आत्मिक चेतना जगाने तथा सामाजिक दायित्व निभाने के लिए जॉन मेरी वियान्नी ने अथक प्रयास किया और आन्स गाँव वालों का हृदय परिवर्तन कर उन्हें ईश्वरीय बातों में मोड़ने में सफल रहे। उन्होंने वहाँ के पल्लीवासियों के लिए चालीस वर्षों तक

बड़ी लगन व परिश्रम से कार्य किया। वे प्रतिदिन 14 से 18 घण्टे लोगों के लिए प्रार्थना करते थे, उनकी प्रार्थनाओं से चमत्कृत होकर लोग उनके पास खिंचे चले आते थे। वे इतने प्रसिद्ध हो गये कि उन तक पहुँचने के लिए सरकार को आन्स गाँव के लिए कई बस सेवाएं चलानी पड़ीं थीं। उनका निवास स्थान एक तीर्थ स्थान बन गया था। उस गाँव तक के केवल स्थानीय लोग नहीं बल्कि यूरोप तथा अमेरिका तक से लोग अपनी आध्यात्मिक समस्याओं को लेकर आते थे जिनका सन्त जॉन मेरी वियान्नी उचित मार्गदर्शन करते थे। इतना ही नहीं दूर-दराज से पुरोहित, धर्माध्यक्ष, कार्डीनल तक उनसे आध्यात्मिक सलाह लेते थे।

जॉन मेरी वियान्नी अति धैर्यवान, दयालु और उदार थे। अल्प भोजन व गर्मी, सर्दी की परवाह किये बिना रात-रात भर जागकर लोगों के लिए काम करना उनकी दिनचर्या थी। वे निरन्तर चालीस वर्षों तक मिशन कार्य करते रहे। उनके जीवन के अंतिम दिनों में लियोन्स नगर की सरकार ने उनके कार्य से प्रभावित होकर उन्हें 'नाइटहुड' की उपाधि से नवाजा था। उन्हीं के द्वारा बालिकाओं के लिए खोला गया 'ला प्रोविडेन्स' नामक स्कूल जो पहले एक अनाथ आश्रम था पूरे फ्रांस में शिक्षा के लिए प्रसिद्ध हुआ। सन 2009 में सन्त पापा ने उन्हें सभी पुरोहितों का सन्त घोषित कर 'पुरोहित वर्ष' को और गरिमामयी बना दिया है।

4 अगस्त संत जॉन मेरी वियान्नी के पावन दिवस पर कलीसिया उन्हें शत् शत् नमन करती है व सभी पुरोहितों को हार्दिक बधाई देती है।

श्रीमती निशी अगस्टीन, कथीड्रल पल्ली, आगरा

Summer Camp held at St. Lawrence Seminary, Agra

Agra, 25 June, After a long break of 3 years due to Covid-19, this year we, the inmates of St. Lawrence Minor Seminary, Agra had a 14 days' summer camp (9th-24th June) in our seminary. During the camp we had a variety of topics i.e. music, media, education, psychology, priesthood and personality development etc. The camp began with a talk on media, mission and inter personal relationship by Fr. Jacob Palamattom. On the following day Sr. Akhila Mary and Mrs. Molly Jose spoke on health and hygiene and made us aware on HIV disease. Then on 13th July Fr. Amit Dominic (DYD) gave us a session on NLP (Neuro Linguistic Programme). He made us aware of our responsibility towards our Archdiocese through a profit making business exercise. Then on the following day Fr. M.A. Johnson dealt with the topic Emotional Maturity. He spoke on 6 basic emotions i.e. fear, anger, sadness, happiness, surprised and disgust. On 15th June Archbishop Most Rev. Dr. Albert D'Souza (Abp. Emeritus) dealt with the topic personality growth in vocation. He taught us to become disciplined and dedicated disciples.

Then on the next day Fr. George Paul enlightened us on education and evangalization. He highlighted his talk on Gospel based values. He also informed us about various Govt. schemes i.e. SDS and NEP 2020.

Then following 5 days were taken care of by Dr. Evelet Sequira M.D. from Mumbai. She conducted workshops on the topic 'A journey of self exploration. Rev. Sr. Pratima RJM and Miss Anita Yadav also attended these workshops. These sessions helped us to discovered ourselves from within.

On 24 June we had thanksgiving Holy Mass offered by Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, our beloved Archbishop. On the very final day Fr. Sebastian Pantaladi had special for us on 'Logical Analysis and Critical Thinking'.

During the camp we had an outing to Shark Water Park, Rohta, where we enjoyed most. In between we had two T-20 Cricket matches at St. Peter's College grounds, Agra. In both matches we, the Seminarians defeated the city Fathers.

We wish to express our sincere gratitude towards our Archbishop Dr. Raphy, Our Rector Rev. Fr. Prakash D'Souza, Vice Rector Fr. Louis

Xess and all the teachers who took classes/ sessions for us during the summer camp. This camp also brought all the seminarians (major and minor) together. May God bless us all.

– Bro. Debashish Nayak

The Mass of the Holy Spirit and Schola Brevis held in St. Lawrence Seminary

Agra, 2 July. Our St. Lawrence Seminary resumed and the new schola brevis began on 2nd July. To mark the new beginning the Mass of the Holy Spirit was celebrated by His Grace Archbishop Emeritus Dr. Albert D'Souza. Members of the staff joined in the Mass. During the Mass, we thanked our out-going Vice-Rector Fr. Louis Xess and welcomed new Vice Rector Fr. Lloyd Lobo. Fr. Louis has been transferred to the Cathedral as Asstt. Parish Priest. Fr. Lobo has come down from St. Mary's Church, Noida. We also expressed our gratitude towards Fr. Prakash Rodrigues, our Professor of Scripture. In his absence, we thanked him. He has gone to St. Fidelis' School, Aligarh (Primary Wing).

We also welcomed our new students. This year our two senior brothes have been promoted to do their Spiritual Orientation cum Philosophy at Masih Vidyapeeth, Etmadpur (Agra). On the other hand 14 new students have joined our seminary family. In his homily His Grace said that, "new gems and pearls are being formed in our minor seminary. Once they are polished and prepared they will be used at various missions and parishes."

In the evening our senior students presented a variety entertainment programme, where new comers were welcomed and felicitated. Bro. Thomas Abraham welcomed everyone, whereas Bro. Ashley proposed the vote of thanks. The programme culminated with a palatable banquet.

– Bros. Amal Joy and Ankit Xaxa
(3rd Year Students)

संत थॉमस पल्ली, आगरा में प्रेरित संत थॉमस का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया

आगरा, 3 जुलाई। कमजोर विश्वासी थॉमस कहलाये जाने वाले प्रेरित संत थॉमस का महापर्व संत थॉमस पल्ली, सिकन्दरा ने बड़ी धूमधाम से मनाया।

पर्व दिवस पर पल्ली पुरोहित आदरणीय फादर डेनिस डिसूजा के साथ श्रद्धेय फादर मून लाजरस, फादर रॉय, फादर वर्गीस (ओ सी डी) व फादर प्रकाश डिसूजा उपस्थित रहे।

मिस्सा प्रवचन में फादर मून लाजरस ने संत थॉमस के जीवन से परिचित कराया व ज्ञानवर्धक प्रवचन द्वारा पल्लीवासियों को पोषित किया। संत फ्रांसिस धर्मसमाज की धर्मबहनों द्वारा वेदी की सजावट की गयी। पेरिश काउन्सिल सदस्यों द्वारा वचन–पाठन किया गया। युवा संघ ने मधुर भजनों द्वारा पूजन विधि को भक्तिमय कर दिया।

प्यार भरे आभार के साथ स्वल्पाहार वितरित किया गया। पल्लीवासियों ने पारस्परिक प्रेम से कहा– हे प्रिय संत थॉमस, हमारे लिए प्रार्थना कर कि जल्दी ही हमें एक नव देवालय की प्राप्ति हो सके।

— रजनी जेम्स, सेंट थॉमस पल्ली, आगरा

St. Peter's College Celebrated the Maiden Founder's Day and Unveils His Bust

Founder's Day is the most important day for an institution. It is the day when a thought, a philosophy or a vision is transformed into a concrete reality, and the philosophy becomes a lodestar for the institution to take form, grow and become a power to reckon with.

For the Peterian Family, it was the day to remember its founder, Archbishop the Most Rev Dr. Joseph Anthony Borghi O C, and value, his legacy and express our gratitude for his vision that led to the creation of St.Peter's College way back in 1846. The education St.Peter's College is known for, would not have happened without the farsight, vision and missionary zeal of the founder.

It was for the first time in the annals of the College the Founder's Day was being celebrated. The credit for it goes to our Principal, Rev. Fr. Andrew Correia. Very few had heard of the founder Archbishop Joseph Anthony Borghi OC, his traits and attributes. The idea of Founder's Day was first mooted by Dr. Neville Smith, an alumnus and authority on the history of the College, one and a half decade ago in a Management Committee meeting. But it took many years and a person of Fr. Andrew's calibre to turn that idea into a reality.

When Fr. Andrew Correia took charge as the Principal of St.Peter's College in 2019, he knew that the Dodransbicentennial would be celebrated during his tenure as the Principal. He wanted rich tributes to be paid to the founder by celebrating the Founder's Day. He studied the history of the College, collected materials, interviewed people and in consultation with his superiors brought up the idea in the Management Committee which decided 7th July as the Founder's Day. He also wanted a bust to be erected in honour of his memory.

The day witnessed twin programmes of the Founder's Day and Farewell to the outgoing Vice-principal Rev. Fr. Santeesh Antony.

The programme began at 7.45 am. The first part was the unveiling of the bust. After a brief introduction by Dr. Antony A.P, the bust was unveiled by Rev. Fr. Sebastian Pantaladi, the first Diocesan Principal of St. Peter's College. Speaking on the occasion, he said that it was our bounden duty to remember the pioneers, especially the founder of the College, for the sacrifices they had made to nurture the institution. He added that the life of the founder, the Most Rev. Dr. Joseph Anthony Borghi, was a testimony to the fact that great things could be achieved even in a short span of life. He congratulated Fr. Andrew Correia for the initiative he had taken to celebrate the Founder's Day.

The Principal, Rev. Fr. Andrew Correia said that Archbishop Joseph Anthony Borghi gave his sweat and blood and made a lot of sacrifices for the institution and we should be grateful to him for his vision and mission. He also paid rich tributes to Col John Baptist Filose for his timely monetary help in the founding of the College.

The latter part of the programme was to bid farewell to the outgoing Vice-principal Rev. Fr. Santeesh Antony. Mrs. Monica Arora felicitated and thanked Fr. Santeesh Antony for the selfless services he rendered to the College. Rev. Fr.

Andrew Correia, our Principal thanked him for his help and cooperation and wished him a fruitful ministry at Anupnagar (Mathura). As a token of love and appreciation, Fr. Santeesh was given gifts by the Management and the Staff Club. Fr. Santeesh Antony thanked everyone for their cooperation and support and requested everyone to pray for him.

The programme was anchored by Mrs. Sophia Praji Varghese, Ms. Kavya Singh and Mrs. Nitika Tewari. Mrs. Nitika Tewari also proposed the vote of thanks.

– Dr. Antony A.P

सद्भावना (आगरा इकाई) द्वारा डॉ. नसरीन बेगम और श्री समी आगाई का अभिनन्दन

आगरा, 3 जुलाई। सद्भावना समिति (आगरा इकाई) द्वारा श्री समी आगाई और डॉ. नसरीन बेगम का हार्दिक अभिनन्दन और सम्मान किया गया। इस अवसर पर जुलाई महीने में अपने जन्मदिन की वर्षगांठ मना रहे सद्भावना समिति (आगरा इकाई) के उपाध्यक्ष डॉ. एस. एस. चौहान और डॉ. नसरीन बेगम को मुबारकबाद दी गई।

भारतीय मुस्लिम विकास परिषद के अध्यक्ष श्री समी आगाई हाल ही में लखनऊ में मिल्ली फाउण्डेशन की ओर से सांप्रदायिक सद्भावना सम्मान पुरस्कार से नवाजा गया है। वहीं दूसरी ओर सद्भावना समिति की जुझारू सदस्या डॉ. नसरीन बेगम को उनकी कई वर्षों तक एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्य करने के बाद कुछ समय पहले ही उन्हें प्रोफेसर के रूप में मनोनीत किया गया है। सद्भावना समिति की ओर से दोनों को बहुत-बहुत बधाई और साधुवाद।

इस अवसर पर स्थानीय सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा में एक अभिनन्दन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जहाँ बर्थडे बेबी सर चौहान ने केक काटा। इसी समय सेमीनेरी में नवनियुक्त फादर लॉयड लोबो का भी स्वागत किया गया। सभी सम्मानित विशिष्ट लोगों को शॉल पहनाकर, एक-एक पौधा देकर अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। समारोह में डॉ. अजय बाबू, डा. मधुरिमा शर्मा, श्रीमती वत्सला प्रभाकर, सुश्री पैन्सी थॉमस, फादर वर्गीस कुन्नथ एवं फादर मून लाज़रस भी उपस्थित थे।

सद्भावना समिति की इस मीटिंग में सद्भावना दिवस (20 अगस्त) एवं शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) को मनाने के सम्बन्ध में विचार विमर्श किया गया। कुछ सदस्यों ने यह भी सुझाव दिए कि किस प्रकार 'सद्भावना' को आम आदमी के बीच ले जा सकते हैं? किस भांति हम अन्य सामाजिक, शैक्षिक कार्यक्रमों को भी इसमें शामिल कर सकते हैं।

वत्सला प्रभाकर (अध्यक्षा) सद्भावना (आगरा इकाई)

Holy Mass of the Holy Spirit and Schola Bravis

Agra, 11 July. St. Francis Xavier's Regional Seminary, Masih Vidyapeeth, Etmadpur, solemnly celebrated the Mass of the Holy Spirit and inaugurated the new academic year 2022-

23 with Schola Brevis. The Archbishop Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, the Chairman of Masih Vidyapeeth graced this occasion. In his homily, he spelt out the importance of the Holy Spirit in our daily lives and urged us to pray to Him for His anointing with the gifts of wisdom and knowledge. He urged the students to be humble to receive God's blessings and gain philosophical knowledge.

The new academic year was inaugurated with the lighting of the traditional lamps and praying to the Holy Spirit. Rev. Fr. Joseph Francis D'Souza, the Rector of the Seminary. in his address welcomed the new staff members namely Fr. Paul D'Souza, Varanasi, the Vice Rector, Fr. M.A. Johnson, Agra. the Coordinator of Spiritual Orientation and Fr. Xavier G., Agra, the Animator of Jyoti Niwas brothers. Thereafter, he out lined the whole academic program of the year and also exhorted the brothers that good discipline, good values and fear of God were the hallmarks of success in one's life. Rev. Fr. Varghese Kanjirakom CMI gave a very inspiring and theological message on formation. At the outset of the Schola Brevis program the seminary choir led the community with a devotional prayer song. Br. Ankit Kumar welcomed the Chief Guest of the day, all the staff members and brothers. Fr. Thomas Quadras OFM (Cap) read the Scripture passage and prayed for the success of the academic year. Br. Bala Teja proposed the vote of thanks. Br. Leon D'Silva anchored the whole ceremony. **- Br. John Joseph, MVP, Agra**

Bishop Joseph Thykkattil of Gwalior returns to his roots

Agra 14-15 July. Our 'own' Bishop His Lordship Rev. Joseph Thykkattil of Gwalior Diocese gave a surprise visit to the Archdiocese on Thusrday-Friday (14-15 July). He was accompained by Very Rev. Fr. Lawrence D'Souza, Vicar General of the same diocese.

During his two days' hectic schedule, first he visited St. Patrick's Church, Cantt and from there Divya Prabha, Baluganj and finally St. Anthony's Convent. There he spent some time with senior Sr. Alice Mathew RJM. Later he reached the Archbishop's House, met both Archbishops. The main purpose of his visit was to meet and spend some valuable time with ailing Msgr. K.C. Thomas. Msgr. was delighted to have an episcopal visit. He had put on best of his priestly garments i.e. white cassock with red buttons and a red colour sash.

We, the city-priests were privileged to sit at the right and left side of Bp. Joe, at the banguqet organised in his 'home-coming' honour. Our Archbishops honoured both guests with shawl and flower bouqets.

On the next day, on his way back he met ASMI Sisters in Fatima Hospital. Then he landed in St. Lawrence Minor Seminary, where of he was the Rector once upon a time. He met the staff, working staff and the students and was pleased to notice the progress overthere. Finally he bid farewell to the city of Taj. At the outskirt, he stopped at St. Peter's Inter College, Rohta Agra. Where Rev.

Fr. Paul, teaches and the little children welcomed him presented him with bouquet etc. From Rohta His Lordship left for his Karma Chhetra (Gwalior) Fr. Moon Lazarus joined them on their way back to Maharaja's city (Gwalior).

एसीडीएसएसएस द्वारा ट्रक चालकों के लिए नेत्र शिविर लगाया गया

आगरा, 16 जुलाई। आगरा कैथोलिक डायसिस समाज सेवा संस्था द्वारा स्थानीय ट्रांसपोर्ट नगर, आगरा में ट्रक चालकों व उनके सहायकों के लिए एक दिवसीय नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया गया। बादलों की गड़गड़ाहट और आसमान में चमकती तेज बिजली के बीच शिविर का उद्घाटन ट्रांसपोर्ट नगर चैम्बर के चेयरमैन श्री वीरेन्द्र गुप्ता और फादर मून लाजरस ने किया। यूकेएसवीके संस्था के निर्देशक फादर पायस ने सबका स्वागत कर शिविर के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। शिविर में ट्रक चालकों में से 38, 28 क्लीनरों में से 18 और 23 मैकेनिकों में 45 से 15 की आँखों की रोशनी कम मिली। इनको नजर का चश्मा दिया गया। संस्था के निर्देशक फादर शिबु कुरियाकोस ने सभी के प्रति आभार जताया।

इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी श्री मुकेश जैन, सिस्टर मेरी डेविड, रंजीत कुमार, रमन कुमार, अभिषेक कुमार एवं भोपाल से आए श्री डिक्सन भी उपस्थित थे।

शिविर में आए कुछ प्रमुख समाज सेवियों ने इसी तरह के अगले दो शिविर इसी महीने में अपने यहाँ लगाने का अनुरोध किया, जिसे फादर शिबु कुरियाकोस ने स्वीकार कर लिया।

—रमन कुमार

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा में धर्मशिक्षा सत्र का आरम्भ

आगरा, 17 जुलाई को सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा छावनी में धर्मशिक्षा की कक्षाओं का उद्घाटन किया गया। मुख्य याजक के रूप में श्रद्धेय फादर जॉन रोशन परेरा थे। फादर जॉन फरेरा ने माता-पिताओं का ध्यान बच्चों के लिए धर्म शिक्षा की उपयोगिता तथा अनिवार्यता पर जोर दिया। उन्होंने उनके जीवन में विश्वास में सुदृढ़ बने रहने के लिए तथा स्कूली शिक्षा की उपयोगिता, बच्चों की उपस्थिति तथा उन कक्षाओं में बराबर भाग लेने पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया। साथ ही उन्होंने माता-पिताओं को समझाया कि वो किस तरह अपने बच्चों को अच्छी पढ़ाई हेतु प्रेरित कर जिम्मेदार नागरिक की भांति समाज तथा देश में भी अपना योगदान दे सकते हैं और कलीसिया में एक अच्छे ईसाई विश्वासी का जीवन जीकर दूसरों के सामने अच्छे आदर्श प्रस्तुत करें। उन्होंने यह भी बताया कि यदि आप आगे बढ़ते हैं, तो आपके बच्चों को महार्धप्रांत की ओर से पूरा-पूरा सहयोग दिया जायेगा। इस अवसर पर फादर भास्कर जेसुराज ने बताया कि हमारे स्कूलों में हमारे बच्चों को इतनी सुविधाएं दी जाती हैं अत: हमें उनका लाभ उठाना चाहिए और अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए मेहनत करनी चाहिए।

आनन्दी तिर्की, सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा

संत अल्फोन्सा स्पेशल स्कूल में पदाधिकारियों के चुनाव सम्पन्न

सेंट अल्फोन्सा विशिष्ट विद्यालय में 20 जुलाई को हैड ब्वाय और हैड गर्ल का चुनाव किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सेंट पॉल इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य आदरणीय फादर जेकब उपस्थित थे। विद्यालय में प्रत्येक वर्ष छात्र-छात्राओं में उत्तरदायित्व की भावना का विकास और विद्यालय के अनुशासन में सहायता के लिए चुनाव कराया जाता है। सभी छात्र-छात्राओं की सहमति से इस वर्ष (2022-23) के हैड ब्वाय के रूप में मास्टर अमन सिंह को चुना गया। फादर जेकब द्वारा मास्टर अमन को इस पदभार से विभूषित कराया और हैड गर्ल के को आदरणीय सिस्टर पीटर द्वारा बैच पहनाकर पदभार ग्रहण कराया गया। हैड ब्वाय और हैड गर्ल ने स्कूल व्यवस्था को बनाये रखने और अपने कर्तव्य पालन का वचन लिया। कार्यक्रम स्कूल की प्रधानाचार्या आदरणीय सिस्टर अल्फो की देखरेख में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के स्पीच थैरेपिस्ट श्री नीतेन्द्र पाल सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम से पूर्व श्रद्धेय फादर जेकब ने सभी छात्र छात्राओं व शिक्षकगण के अच्छे स्वास्थ्य की कामना और पवित्र जल से समस्त विद्यालय भवन व प्रांगण को आशिषित किया।

—नीतेन्द्र पाल सिंह

मनकामेश्वर मंदिर (रावतपाड़ा) द्वारा चैरिटी व सेमीनेरी में दुग्ध-दान

आगरा, 20 जुलाई। मनकामेश्वर मंदिर (रावतपाड़ा), आगरा द्वारा सावन महीने में एक और सराहनीय प्रयास के अन्तर्गत मदर तेरेसा होम (प्रेमदान) और सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा में भरपूर मात्रा में दुग्ध वितरित किया गया।

इस अवसर पर मनकामेश्वर मंदिर के प्रमुख महन्त श्रीमन योगेश पुरी स्वयं अपने कुछ भक्तों और दानदाताओं के साथ प्रेमदान में उपस्थित हुए। संपर्क सूत्र फादर मून लाज़रस के माध्यम से महन्त जी ने दूध के साथ-साथ प्रेमदान में रहने वाले दिव्यांग और वृद्धजनों को बिस्किट और नमकीन भी वितरित किये। उन्होंने बताया कि सावन महीने में बहुत से भक्त शिव जी को दुग्धाभिषेक करते हैं। बहुत सा दूध मंदिर में बच जाता है, जिसे निकटवर्ती जरूरतमंद लोगों, गाँवों और अस्पतालों आदि में आवश्यकतानुसार बंटवा दिया जाता है। प्रेमदान और सेमीनेरी में इस प्रकार वितरण का यह उनका यह पहला प्रयास है। समाचार लिखे जाने तक पाँच-छः बार दूध वितरित किया जा चुका है। मनकामेश्वर बाबा अपने सभी भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करे, जिनकी प्रेरणा से भक्तों ने यह भला कार्य किया।

Feast of St. Lawrence celebrated: Newly ordained priests felicitated

Agra 21 July. The feast day of St. Lawrence of Brindisi, Patron of the Seminary was celebrated with grant fervour and joy. His Grace Most Rev. Dr. Raphy Manjaly offered the thanksgiving Holy Mass. During the Mass newly ordained priests namely Rev. Fathers Asime Beck, Sachit Kerketta and Kulkant Chhinchani were welcomed and felicitated. Fr. Sachit chanted the Holy Gospel. His Grace in his

inspiring homily said, that "God gives to each of His gratious gifts. It is upto each one of us how to make the best of it."

After the Mass, Fr. Prakash D'Souza, Rector welcomed everyone. The Archbishop and all new priests were honoured with shawls and bouqets. On behalf of all his newly ordained companions, Fr. Kulkant proposed the vote of thanks. Then the cake was cut and every one was served a delicious breakfast.

Later due to forecast of a very heavy shower, we cancelled the most excited and expected basketball match. With a great fellowship meal the festivity came to its end.

Bro. Mitesh Martin, Aligarh

मसीह विद्यापीठ, एत्मादपुर में मरियालय का उद्घाटन

हमारे मसीह विद्यापीठ गुरुकुल में एक विशाल एवं भव्य माता मरियम के ग्रोटो (मरियालय) की नींव 18 जून 2022 को फादर स्टेनी डिसिल्वा के करकमलों द्वारा डाली गयी। इसका उद्घाटन 23 जुलाई 2022 को ग्रोटो की आशीष से हुआ। महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने आशीष की प्रार्थना पढ़ी और पवित्र जल की आशीष से उद्घाटन किया। गुरुकुलाचार्य श्रद्धेय फादर जोसफ फ्रांसिस डिसूजा ने ग्रोटों के निर्माण के विकास एवं उत्थान की प्रक्रिया का पूर्ण विवरण दिया। उनके कार्यकाल में उत्तर प्रदेश और राजस्थान धर्मक्षेत्र के सारे धर्माध्यक्षों की सलाह एवं अनुमति से ग्रोटो का निर्माण किया गया। उन्होंने अपने सम्बोधन में इसके निर्माण के लिए सभी धर्माध्यक्षों एवं प्रतिष्ठित लोगों को, जिन्होंने आर्थिक रूप से तथा अपनी प्रार्थनाओं द्वारा अपना सहयोग दिया, सहृदय धन्यवाद दिया।

तत्पश्चात महाधर्माध्यक्ष जी ने इस गुरुकुल से जुड़े सभी पुरोहितों जैस श्रद्धेय फादर जोसफ फ्रांसिस डिसूजा, फादर स्टेनी डिसिल्वा, फादर पॉल डिसूजा एवं अन्य पुरोहितों को धन्यवाद दिया और निर्माणकर्ताओं भाई सुभाष एवं उनकी टीम के सभी सदस्यों को उनके अथक परिश्रम के लिए उनका मनोबल बढ़ाया। भाई अमित ने मसीह विद्यापीठ परिवार की ओर से महाधर्माध्यक्ष जी और मरियालय के निर्माण एवं उद्घाटन से जुड़े सभी लोगों का आभार प्रकट किया। गुरुकुल के सभी पुरोहितों एवं भाइयों ने मिलकर रोजरी माला में सत्र 2022-23 को सुचारू रूप से आगे बढ़ने के लिए माँ मरियम से प्रार्थना की।

सायंकाल माता मरियम के समक्ष एक छोटी प्रार्थना सभा रखी गई, जिसमें फादर एम.ए. जॉनसन ने माँ मरियम से सभी मिशनरियों के लिए प्रार्थना की और फादर ए. सेबास्टियन ने अपने जीवन में प्राप्त माँ मरियम के अनुभव हमारे बीच रखे। उन्होंने शैतान से लड़ने के लिए हमें प्रणाम मरिया का जाप करने के लिए आह्वान किया। इस उद्घान कार्यक्रम का सम्पूर्ण आयोजन श्रद्धेय फादर स्टेनी डिसिल्वा के निर्देशन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

-भाई जॉन जोसफ (द्वितीय वर्ष दर्शनशास्त्र)

St. Patrick's Church, Agra bids adieu to Molly Aunty

Agra, 24 July. The parishioners along with the members of the Parish Pastoral Council came together for a formal farewell ceremony of Mrs. Molly Kutty Jose better known as Molly Aunty, at St. Patrick's Church after the Sunday Mass. Sr. Annie, Superior presented a sapling and Rev. Fr. Bhaskar Jesuraj presented a memento.

Molly Aunty is well-known person at St. Patrick's Parish and also for the Archdiocese of Agra. She was a member of St. Patrick's of the last 33 years and has always led the path of truth, love and justice. Rev. Fr. Gregory praised her efficient contribution in the Archdiocese. She has made a great contribution for the welfare of adolescent girls, parish members and humanity in spite of many challenges. Her contribution in the diocesan marriage course is highly appreciated and many couples still seek her for guidance and moral support. She has rendered her selfless services for the growth of the mission in the Archdiocese in the areas of social work, healthcare and women empowerment etc.

During the Covid-19 pandemic, Molly aunty assisted the diocese in organizing awareness programs and also assisted in the distribution of dry ration kits, cooked food, sanitizers, masks, soaps, and sanitary pads.

Molly aunty shared her experiences of being in Agra and said that after a long time of praying, reflection and guidance from the Holy Spirit, she felt that the Lord needs her to return to her hometown in Kerala. She said goodbye to the entire parish with great sadness, but with great joy she assured her prayers and humbly requested to do the same for her.

- Tresa Lince, Agra Cantt.

संत अल्फोन्सा मिशन, पोइया में वार्षिकोत्सव सम्पन्नः आठ सदस्यों ने संस्कार ग्रहण किए

संत अल्फोन्सा मिशन पोइया आगरा से 12 किमी. दूर हाथरस रोड पर स्थित आगरा महाधर्मप्रान्त का एक नया मिशन है। यह निष्कलंक माता कथीड्रल गिरजाघर का यमुना पार इलाका है, जो एत्मादपुर तहसील के खन्दौली खण्ड विकास क्षेत्र में आता है। मिशन सिस्टर्स ऑफ अजमेर धर्मसमाज ने यहाँ पर 5 एकड़ जमीन स्कूल खोलने के लिए खरीदी है। उस जमीन में एक कॉन्वेण्ट है और उस कॉन्वेण्ट के चैपल में पिछले तीन साल से रोजाना मिस्सा चढ़ाया जा रहा है।

अनूपनगर (मथुरा) के संत माइकल मिशन के 5 ईसाई परिवार यहाँ रहते हैं। जुलाई 31, 2022 को मिशन के वार्षिक पर्व के अवसर पर इन परिवारों के 8 सदस्यों ने पहली बार पाप-स्वीकार, परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण संस्कार महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि के करकमलों से ग्रहण किया। सुबह 9 बजे मिस्सा के बाद एक जुलूस निकाला गया। इस जुलूस और पूजन विधि में भारत देश, सभी नेताओं, समृद्धि एवं विकास तथा सर्वत्र खुशी एवं शान्ति के लिए प्रार्थना की गयी। 12 बजे इस वार्षिकोत्सव के बाद 40 लोगों ने प्रीतिभोज का आनन्द लिया। इस अवसर पर फादर जोसफ रोड्रिग्स, फादर जमिल्टन और फादर एण्ड्रयू कोरिया उपस्थित थे। फादर वर्गीज इस मिशन के प्रभारी पुरोहित ने पर्व का संचालन किया।

संत जूड पल्ली, कौलक्खा में ग्रांड पैरेन्ट्स डे सम्पन्न

आगरा, 31 जुलाई। संत जूड पल्ली, कौलक्खा में ग्राण्ड पैरेन्ट्स डे बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मिस्सा पूर्व श्री विन्सेंट द्वारा परिचय में बताया गया कि परिवार में एक बुजुर्ग व्यक्ति का क्या महत्व होता है और उसकी आशीष हमारे लिए कितनी मायने रखती है। मिस्सा में अपने प्रवचन में फादर राफी ने बताया कि बुजुर्ग व्यक्ति हमारे घरों की नींव हैं, वे हमारे लिए छायादार पेड़ हैं, जिन्हें काटा नहीं जाता। जहां सुकून से बैठा जाता है। फादर राफी के द्वारा जब गिरजाघर के सभी बुजुर्गों को सम्मानित किया गया तो उन सबकी आंखों में चमक देखते ही बन रही थी। वास्तव में उन सभी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। **-अंजलीना मोसस, आगरा**

Abp. Dr. Albert D'Souza (Emeritus) turns 77

Agra, 2 August. Most Rev. Dr. Albert D'Souza (Archbishop of Emeritus) turns 77 years. His real birthday falls on 4th Aug., but due to his prior engagement on 4th August, we anticipated his birthday celebration two days. Thus, he was felicitating on 2nd August.

During the course of the day, Religious, Seminarians and Priests from various mission stations and parishes wished him. In the evening a simple birthday dinner was hosted in the Archbishop's House, where he along with Fr. Sunil Mathew (birthday on 5th Aug.) cut the birthday cake. God bless our Archbishop Dr. Albert D'Souza.

सिस्टर मिरियम पेरेरा नहीं रहीं

आगरा, 7 अगस्त। जीजस एण्ड मेरी धर्मसमाज की वयोवृद्ध सिस्टर मिरियम पेरेरा का शनिवार 6 अगस्त को प्रातः 7.15 निधन हो गया। वे 87 वर्ष की थीं और विगत कुछ समय से बीमार चल रही थीं।

सिस्टर मिरियम पेरेरा का जन्म 8 दिसम्बर 1934 को मुंबई में हुआ था। उन्होंने प्रथम व्रत धारण 4 जनवरी 1959 को अंतिम व्रत 4 जनवरी 1964 को सेंट पैट्रिक्स कॉनवेण्ट, आगरा में धारण किया। धर्मसमाज में रहते हुए उन्होंने एक शिक्षिका, छात्रावास मिस्ट्रेस, साक्रिस्तियन आदि के रूप में अपनी सेवाएं दी। उनके दिल में गरीब व निर्धन लोग, विशेषकर लड़कियों के लिए अगाध अनुराग था। वे वास्तव में सेंट सिस्टर क्लॉडीन थेवने की पुत्री या दूसरा रूप थीं।

उनकी दफर की मिस्सा रविवार 7 अगस्त को कॉन्वेण्ट चैपल में सम्पन्न हुई। पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर इग्नेशियुस मिराण्डा सहित करीब 12 पुरोहितों ने मिस्सा में भाग लिया। जे एम सी कॉलेज, नई दिल्ली की प्रधानाचार्या सिस्टर मरिया ने सिस्टर के जीवन परिचय से सबको परिचित कराया, जबकि कान्वेण्ट सुपीरियर सि. लीना ने उपस्थित सबके प्रति आभार जताया। घनघोर बारिश के बावजूद भी विशाल संख्या में में लोगों ने भाग लिया। मसूरी, देहरादून, सरधना और नई दिल्ली से भी सिस्टर्स उपस्थित रहीं। सिस्टर मिरियम के परिवार मुंबई से बारह जन दफन मिस्सा में शामिल हुए।

मिस्सा के बाद कॉन्वेण्ट कम्पाउण्ड में ही बने सिस्टर्स के कब्रिस्तान में सिस्टर्स को दफना दिया गया। उस समय प्रभु की आशीषों की घनघोर वर्षा हो रही थी। प्रभु उनकी आत्मा को अनन्त शांति प्रदान करे। - **सम्पादक**

NEWS FROM GREATER NOIDA

International Yoga Day Celebrated

Yoga takes you into the present moment, the only place where life exists. International Yoga Day which is celebrated on 21st June every year. This year's theme was "Yoga for Humanity." Jesus and Mary Convent School, Greater Noida observed International Yoga Day with enthusiasm and zeal. The event started at 7.30 am with warming up exercises followed by suryanamaskars and breathing exercises. The school Principal, teachers and students actively participated. The programme concluded by the words of wisdom by the principal Rev. Fr. Rogimon Thomas on how to live a healthy and a happy life.

Workshop on National Education Policy 2020 conducted

Jesus and Mary Convent School, Greater Noida organized a workshop on National Education Policy 2020 for teachers on 30th June 2022, to understand and enhance their new educational skills. Mrs Vinita Sareen was the resource person who conducted the workshop and introduced staff to the new structure of education which is based on foundational capacities of literacy and numeracy and 'higher-order' cognitive capacities, such as critical thinking and problem solving, social, ethical, and emotional capacities and dispositions. NEP 2020 focuses on holistic development, early childhood care and development, activities based learning, discovery based learning, inquiry based learning and higher order thinking skills.

Foundation Day and Investiture Ceremony held

Jesus and Mary Convent School Greater Noida on Saturday, 9th July 2022 celebrated its 11th foundation day completing its 11 years of successful execution .It has been a journey of enthusiasm and steady effort where it is serving the nation in the best way by imparting education and giving hands to the development of nation. Various cultural programmes made

the celebration traditional and colourful.

Principal Rev. Fr. Rogimon Thomas wished and congratulated the staff and students on completing 11 years of imparting education. He assured to raise the standard of the school and showed his enthusiasm for better education.

On the same day Jesus and Mary Convent School organised Investiture's Ceremony. A good leader is the one who knows the way, goes the way and shows the way. To inculcate the leadership qualities students, to the newly elected cabinet members badges were given to the House Captains and Class Prefects. The principal Rev. Fr. Rogimon Thomas congratulated the newly appointed members and motivated them to work hard reminding them, that their responsibilities must not hinder their academics. He also suggested them to be the role models for all students of JMCS.

- Priyanka Sharma

सेंट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में सिंगल यूज प्लास्टिक प्रतिबन्ध पर जागृति कार्यक्रम आयोजित

फतेहाबाद, 12 जुलाई को सेंट जॉन पॉल्स स्कूल भरापुर, फतेहाबाद में छात्र-छात्राओं ने सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग की रोकथाम कैसे करें तथा इससे होने वाली हानि से कैसे बचें, को एक नाट्य तथा नृत्य के माध्यम से सभी के सामने प्रस्तुत किया। इस मौके पर फतेहाबाद के खण्ड विकास अधिकारी श्री सुमन्त यादव भी उपस्थित रहे। श्री सुमन्त जी ने अपने संदेश में बच्चों तथा बड़ों को अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभाने तथा सभी को अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए आज से और अभी से सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने के लिए आग्रह किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य फादर सन्तियागो राज ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुमन्त यादव को स्मृति चिह्न के रूप में एक पौधा भेंट किया।

The Feast of Mount Carmel celebrated in Mathura

The Sisters of the Sacred Heart Convent, MotiKunj, Mathura celebrated their Patroness feast Our Lady of Mount Carmel on 16th July 2022. His Grace Most Rev Dr. Raphy Manjaly and Most Rev. Dr. Albert D'Souza (Emeritus) offered the Eucharist. Priests and Religious Sisters were invited from the Archdiocese. His Lordship Rev Dr. Albert beautifully celebrated the Mass and an enriching homily was preached by His Grace Most Rev. Raphy Manjaly who exlained the significance of the day and the importance of the scapular. The short introduction was read out on Mount Carmel. The love offering of food grains was offered at the altar for the poor people. The congregation was led to prayers via soothing and blissful signing during mass. The petitions were prayed and the vote of thanks was proposed thanking His Grace and the gathering present.

Everyone received a token of Mary's love i.e. Scapular and a Rosary each. There after a game was conducted by the Sisters and the gifts were distributed to the winners followed by a

sumptuous fellowship meal. The celebration was very enriching and enlightening filled with the grace of God. **- Sr. Maria Pereira, Mathura**

Birth Centenary of Mother Nuzzo and Feast of Sacred Heart celebrated at Kosikalan (Mathura)

Kosikalan, 24 July. The annul feast of the Sacred Heart of Jesus was celebrated by the Daughters of the Sacred Heart Sisters, along with the birth centenary of Rev. Mother Maria Theresa Nuzzo. the foundress of DSH Congregation.

A solemn thanksgiving Mass was offered in St. Theresa's Church, Kosikalan, Mathura. Fr. Moon Lazarus was the main celebrant, while Fr. Joby K. and Fr. Sachit Kerketta concelebrated with him. Rev. Sr. Anna DSH, gave a lovely introduction of the Mass and threw light on the life and mission of Maltese nun Most Rev. Sr. Nuzzo. Fr. Saching preached a lovely homily on the theme. "Our Father who art in heaven."

After the Mass, all parishioners gathered in the school hall and felicitated the Sisters. Then all shared in the common breakfast. While the people wished them Happy Feast to Sisters Sabeena, Anna and Sanjita.

To mark the occasion priests and religious were invited on the eve of the celebration, for an agape. Rev. Sisters cut the cake and served the guests a palatable dinner.

Sr. Sabeena Toppo, Kosikalan

संत फिदेलिस चर्च, अलीगढ़ में ग्राण्ड पेरेन्ट्स डे मनाया गया

संत जोआकिम एवं अन्ना का पर्व 24 जुलाई को संत फिदेलिस पल्ली, अलीगढ़ में बड़े हर्षोल्लास के साथ ग्राण्ड पेरेन्ट्स डे के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर श्रद्धेय फादर चार्ल्स टोप्पो का विदाई समारोह भी आयोजित किया गया। ऐसा हरेक कार्य जो ईश्वर को समर्पित कर शुरु किया जाता है, अपनी पूर्णता तक पहुंचता है। सर्वप्रथम मिस्सा बलिदान में सभी लोगों ने भक्ति भाव से भाग लिया। मुख्य याजक फादर चार्ल्स थे। वेदी पर उनका साथ फादर प्रकाश, फादर सुरेश और जॉन रोशन परेरा ने दिया। सभी वरिष्ठजनों एवं दादा-दादी, नाना-नानी ने जुलूस के रूप में गिरजाघर में प्रवेश किया। उस दिन की पूजन पद्धति का आयोजन बच्चों द्वारा किया गया था। मिस्सा के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसका संचालन आशना इब्राहीम एवं सिल्विया जॉन ने किया। सभी का स्वागत करते हुए श्री अनूप रंजन ने प्रारम्भिक प्रार्थना की अगुवाई की।

कहा गया है कि असल से सूद प्यारा होता है और सभी ग्राण्ड पेरेन्ट्स के चेहरे इस बात के जीते जागते सबूत थे, जब उन्होंने अपने नन्हें मुन्नों को स्टेज पर नृत्य करते देखा। पेरिश काउंसिल की तरफ से श्रद्धेय फादर चार्ल्स टोप्पों की सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया गया एवं उनकी आगे की पढ़ाई के लिए उनको शुभकामनाएं देते हुए श्रीमती अजी टॉम ने उनका अभिनन्दन किया। तत्पश्चात फादर चार्ल्स ने भी संत फिदेलिस पल्ली में बिताए हुए अपने पलों को याद किया।

'घर बड़े होते जा रहे हैं पर बुजुर्ग घटते जा रहे हैं

क्योंकि वृद्धाश्रम में उन्हें छोड़ने की प्रवृत्ति प्रभावी होती जा रही है।' समाज में बढ़ रहे इसी रूझान पर केन्द्रित मार्मिक नाटक युवाजनों द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे देखकर सभी की आंखे नम हो गईं। ग्राण्ड पेरेन्ट्स की प्रतिनिधि श्रीमती मार्वल मिंज ने सभी को धन्यवाद किया और इस दिन को मनाने के लिए आभार प्रकट किया। फादर चार्ल्स को पल्ली एवं धर्मशिक्षा विभाग की शिक्षिकाओं की ओर से विदाई उपहार दिया गया। फादर जॉन रोशन ने भी फादर चार्ल्स के साथ गुजारे वक्त को सभी के साथ साझा किया। उन्होंने जीवन में बुजुर्गों के साथ देने एवं सहारे पर जोर दिया। कार्यक्रम के समापन पर सभी बच्चों ने अपने मनोहारी नृत्य द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के बाद सभी के लिए चाय नाश्ते का प्रबंध किया गया था। उस घर में बच्चों को एक शिक्षक और दोस्त बचपन में ही मिल जाता है जिस घर में बुजुर्गों का वास होता है। हम सभी पर उनका साया इसी तरह बना रहे। – **फादर जॉन रोशन परेरा**

छात्र-छात्राओं के लिए पॉक्सो-एक्ट पर सेमिनार आयोजित

28 जुलाई 2022, सेंट जॉन पॉल्स स्कूल, भरापुर फतेहाबाद में पॉक्सो समिति की ओर से छात्रों की बेहतरी के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार की मुख्य अतिथि श्रीमती मॉली जोस का स्वागत विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रद्धेय फादर सन्तियागो राज एवं सिस्टर प्रतिमा एक्का के द्वारा पुष्प भेंट करके किया गया।

श्रीमती मॉली ने बच्चों को बताया कि, ''हम सभी भाग्यशाली हैं कि हमें ईश्वर ने लड़की या लड़के के रूप में जन्म दिया है। हमारा जीवन जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक अनेक पड़ावों से गुजरता है, जिसमें किशोरावस्था सबसे महत्त्वपूर्ण होती है। इस उम्र में बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर अनेक बदलाव होते हैं। इन परिवर्तनों से बच्चों को घबराना या डरना नहीं चाहिए।'' बच्चों ने उनसे अनेक प्रश्न किए, जिनका समाधान उन्होंने बड़े सरल एवं सहज शब्दों में किया। धन्यवाद ज्ञापन स्कूल की हैड गर्ल कु. आस्था गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में श्रीमती नम्रता शर्मा, श्रीमती मोनिका, श्री अर्पित कुमार एवं श्री रजत उपाध्याय भी उपस्थित रहे।

सेंट मेरी ऑफ दी एंजेल्स सिस्टर्स ने 150वीं जयन्ती मनाई

अलीगढ़, 31 जुलाई–2 अगस्त। सेंट मेरी ऑफ दी एंजेल्स (एफ एस एम ए) धर्मसमाज की सिस्टर्स ने यहाँ सेंट फिदेलिस चर्च, अलीगढ़ में अपने धर्मसमाज की स्थापना की 150वीं जयन्ती बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाई। समारोह की भव्य शुरुआत रविवार 31 जुलाई को पवित्र मिस्सा बलिदान के साथ हुई, जब श्रद्धेय फादर सनी कोट्टूर ने धन्यवाद की पवित्र मिस्सा के साथ जयन्ती समारोह की शुरुआत की।

एफ एस एम ए सिस्टर्स अलीगढ़ में अवर लेडी ऑफ फातिमा सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल का संचालन करती है, जहाँ छात्र–छात्राएं दोनों ही समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं। एफ एस एम ए संस्था की स्थापना 2

अगस्त 1871 को फ्रांस में हुई थी। संस्थापिका का नाम सिस्टर कैरोलिन था। कैप्युचिन मिशनरियों के आमंत्रण पर 3 अक्टूबर 1892 को कुछ सिस्टर्स भारत में महु (मध्यप्रदेश) में आईं और 1893 में स्थानीय निर्धन बालिकाओं के अध्ययन एवं निवास के लिए एक बोर्डिंग स्कूल खोला गया। संस्था की धर्मबहनों माता मरियम और असीसी के संत फ्रांसिस को अपना आदर्श मानकर उनके पद्चिन्हों पर चलती हैं।

अलीगढ़ के अवल लेडी ऑफ फातिमा विद्यालय की 150वीं वर्षगांठ तथा एफ एस एम ए धर्मसमाज के स्थापना दिवस के अवसर पर महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने कॉन्वेण्ट में पवित्र मिस्सा बलिदान अर्पित किया। उनके साथ निकटवर्ती कई अन्य पुरोहितों ने भी मिस्सा बलिदान में भाग लिया। अपने प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी ने माता मरियम के जीवन एवं सेवाकार्यों पर प्रकाश डाला। मिस्सा बलिदान के पश्चात सिस्टर्स ने बधाई केक काटा। प्रीतिभोज के साथ समारोह समाप्त हो गया। – **सिस्टर रेखा (एफ एस एम ए)**

सेंट जॉन पाल्स स्कूल, फतेहाबाद में अभिभावकों के लिए सेमिनार आयोजित

फतेहाबाद, 9 जुलाई 2022, को सेंट जॉन पॉल्स स्कूल भरापुर, फतेहाबाद में अभिभावकों के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का आरंभ ईश्वर को धन्यवाद करते हुए दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। उसके उपरान्त शिक्षकगण ने एक भजन प्रस्तुत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य फा0 सन्तियागो राज ने सभी अभिभावकों का स्वागत किया। विद्यालय के छात्रों ने शिक्षा के महत्व को एक नृत्य-नाटिका का मंचन करके अभिभावकों को समझाया। सेमिनार के मुख्य अतिथि फा0 जॉन रोशन परेरा थे। श्रीमती नम्रता शर्मा ने सभी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नीतू वशिष्ठ ने किया।

दादाजी

दादा जी नाराज़ हैं।
रोज़ रहा करते हैं वे क्या आज हैं!
पता नहीं चल पाता है कि वे किससे नाराज़ हैं
बच्चों से नाराज़ हैं कि बूढ़ों से नाराज़ हैं
चतुरों से नाराज़ हैं कि मूढ़ों से नाराज़ हैं
कचरों से नाराज़ हैं कि कूड़ों से नाराज़ हैं
चोटी से नाराज़ हैं कि जूड़ों से नाराज़ हैं
दादा जी नाराज़ हैं।
रोज़ रहा करते हैं वे क्या आज हैं!

दादा जी नाराज़ नहीं
उन्हें हुआ है क्या, यह कोई राज़ नहीं
गुमसुम हैं अपने कमरे में
उन्हें बुलाए जो ऐसी आवाज़ नहीं।
गुज़र गए उनकी दुनिया के मेले-ठेले
दादी नहीं रहीं तब से हैं अकेले।
कहाँ चले ऐ बच्चों उनको साथ लो
अपनी नरम हथेली में अब उनका हाथ लो
ले जाओ उन बागीचो के फूलों में
अपने साथ झुलाओ उनको झूलों में
फिर देखो लड्डू की चोरी करने में
साथ तुम्हारे वे भी चल फँस सकते हैं
हँसते हो जिस तरह
उस तरह वे अभी भी हँस सकते हैं।
चूको मत वे कल न रहेंगे, आज हैं
भूल जाओ कि दादा जी नाराज़ हैं।

कविः नवीन सागर
सौजन्य से श्रीमती कमेलश गुप्ता, दिल्ली

Perpetual Profession of CFMSS Sisters held in Delhi

"Journeying with the Synodal Church as Eucharistic Missionaries…"

Making this significant theme as the deep desire of their young hearts, seven junior sisters of Clarist Franciscan Missionaries of the Most Blessed Sacrament, belonging to St. Francis Province (Delhi) moved forward to the altar of the Lord to proclaim their "YES" forever, in Good Shepherd Church, Delhi

June 25, 2022 was the much-awaited day for seven Sisters and also for the entire CFMSS family, especially for St. Francis Province. The Sisters walked down the aisle carrying lit lamps, led by the rhythmic and vibrant entrance dance by youth of the Parish. They were accompanied by the main celebrant Most Rev. Dr. Anil Couto, other priests and the Provincial Team members and the Tertian Mistress.

During his inspiring homily, His Grace highlighted the days' theme. Recalling the Synodal journey that the Church is making today. He reinforced the call of each CFMSS to participate in this journey with our unique Eucharistic-Missionary charism. He also stressed on the need to be grounded in the Gospel and to enter deeply into the Paschal Mystery of Jesus Christ, to be effective evangelizers in the present world.

The Sisters were given the Ring as a symbol of their mystical marriage and the Crucifix symbolizing their share in the Passion of Christ which was a reminder to them of how the Bride should resemble her Bridegroom.

The communion rite was followed by a heart-touching "Vote of Thanks". As the melodious choir sang the recessional hymn, the group photographs were clicked. Felicitation of the Sisters was done in the tastefully decorated Parish Hall, with the cutting of the cake, garlanding and greeting song. Everyone gathered enjoyed for the delicious meal.

- Sr. Tresa Francis CFMSS, Delhi

Sr. Noella D'Souza CFMSS, laid to rest

Gurgaon, 3 July, Rev. Sr. Noella D'Souza CFMSS was laid to rest here in Christian Cemetery, Gurgaon (Haryana). Sr. Noella passed away on Friday, 1st Dec. 2022 at 9:18 p.m. in Holy Family Hospital, Delhi. She was 66 years old. She worked in Bulandshahar Mission since 1994-2001.

Sr. Noella was suffering from rhumatoid arthritis. She bore aches and pains as best as she could. In the first week of April she slipped and fell and had to be hospitalized. Diagnosis revealed a spinal injury which required surgery. Thus, she was admitted to the Indian Spinal Centre. Following the surgery she developed some complications. Meanwhile she had

contacted Covid-19. Immediately she was rushed to Holy Family Hospital. Delhi, where she was given all possible medical treatment for the past 8 weeks. Throughout this period she was on ventilator, and finally succumed to her illness.

Sr. Noella is survived by her 4 younger brothers and 7 sisters, one of whom is a member of the Apostolic Carmel Order. Her older sister whose son is a SVD Priest passed away a few years ago. During her post surgery days, 3 of her sisters had the fortune to visit her. Her 3 sisters, a brother and sister-in law were present for the funeral Mass.

Most Rev. Dr. Vincent Concessao, Emeritus Archbishop of Delhi offered the funeral Mass. Rev. Fr. Vincet D'souza, V.G. and many other priests concelebrated in the Mass. Rev. Fr. Eugene Moon Lazarus from the Archdiocese of Agra participated in the funeral Mass and funeral rites. Rev. Fr. Vincent in his homily said that, 'So far Sr. Noella prayed to Jesus, Mother Mary, St. Francis and Sr. Clare etc. but now she is seeing them face to face.

After the Mass Sr. Noella was buried in the Christian Cemetery, Gurgaon amidst the heavy showers from above. May she rest in peace!

- Fr. Moon Lazarus, Agra

ब्रदर विन्सेन्ट डीकन अभिषिक्त

प्रयागराज, 7 अगस्त। पुरोहित बनने के लिए गुरुकुल की शिक्षा की समाप्ति पर ब्रदर विण्सेण्ट स्वामी को महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मन्जलि ने रविवार 7 अगस्त को स्थानीय सेंट जोसफ महागिरजाघर में डीकन (उपयाजक) अभिषिक्त कर दिया।

बंगलूरू में 23 अगस्त 1994 को जन्मे विन्सेण्ट की प्रारम्भिक गुरुकुल की शिक्षा–दीक्षा सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी, आगरा में हुई। तत्पश्चात एक वर्षीय आध्यात्मिक साधना व दर्शनशास्त्र के लिए उन्हें मसीह विद्यापीठ भेजे गए। ईश शास्त्र पढ़ाई वे सेंट जोसफ गुरुकुल, प्रयागराज से कर रहे हैं।

ब्रदर विन्सेण्ट के साथ ही बारह अन्य छात्रों को भी उपयाजक अभिषेक प्रदान किया गया। अपने प्रभावशाली प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष ने नवअभिषिक्त उपयाजकों को सम्बोधित करते हुए कहा, कि ''संत पिता की शिक्षानुसार हमें भी लोगों के पास जाना, धर्मशिक्षा आदि देनी है। हमें बैठकर उनकी राह नहीं देखनी है, कि लोग हमारे पास आएंगे।'' महाधर्मप्रांत की ओर से ब्रदर विन्सेण्ट के सेमीनेरी रैक्टर फादर जोबी (मैथ्यू) और रीजेन्सी बॉस फा. सन्तीश एन्थोनी, सत्य सेवा सिस्टर्स भी उपस्थित थे।

दोपहर भोजन के बाद अग्रवालों की बैठक में नवाभिषिक्त विन्सेण्ट स्वामी का अभिनन्दन किया गया। केक काटकर सबका मुँह मीठा कराया गया। **–ब्रदर आशीष जॉन**

Archdiocese at a Glance...Cont.

Grand Parents' Day Celebration: Hathras, Aligarh & St. Jude's, Agra

Schola Brevis: SLS, Agra | ACDSSS Free Eye Camp | New Grotto at Masih Vidyapeeth

Mrs Molly Jose honoured by H. Grace | Foundress Mother Nuzza B. Centenary, Kosi | 150 Years of Sevice, FSMA, Aligarh

Mahant Yogesh Puri at M.C., Agra | New Cassocks . . . Old Wine! | St. Alphonsa's Feast: Poiya Ghat, Agra

Lest we forget...

Mrs. Philomina Kurian
M/o Fr. Thomas K. K.
12.07.2022

Mrs. Elianma Abraham
M/o Fr. Sebastian K.
25.07.2022

Mr. C. K. Philip
Uncle of Fr. Vinesh
27.07.2022

Mr. Anton P. D'Souza
B/o Sr. Magdaline PSOL
28.07.2022

Rev. Sr. Miriam RJM
St. Patrick's Community
06.08.2022

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From : The Manager, Principal, Staff & Students of

St.Felix Nursery School

Wazirpura Road, Agra - 282 003
E-mail: info@stfelixagra.com / principal@stfelixagra.com
Website: www.stfelixagra1978@gmail.com
Tel: 0562-2856448, Mobile: 8979440043

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 2854123

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com